आम आदमी पत्रिका

वर्ष-10//अंक-3//दिसंबर 2021

प्रबंध संपादक	: उमेश के बंसी
सर्कुलेशन इंचार्ज	: प्रकाश बंसी
रिपोर्टर	: नेहा श्रीवास्तव
कंटेंट राईटर	: प्रशांत पारीक
क्रिएटिव डिजाइनर	: देवेन्द्र देवांगन
मैग्ज़ीन डिज़ाइनर	: युनिक ग्राफिक्स
मार्केटिंग मैनेजर	: किरण नायक
एडमिनिस्ट्रेशन	: निरूपमा मिश्रा
अकाउंट असिस्टेंट	: प्रियंका सिंह
ऑफिस कॉर्डिनेटर	: योगेन्द्र बिसेन

प्रधान कार्यालय

965/1 कक्कड़ चौक, श्याम नगर रोड,
कटोरा तालाब,रायपुर, छत्तीसगढ़

फोन : 0771-4044047

ईल : khabar@aamaadmi.in

कार्यालय

प्लाट नं.118, कंचन बाग, राजनांदगांव

प्रकाशक

उमेश कुमार बंसी, क्वाटर नंबर 10, एम.एम.
रियल स्टेट कॉलोनी, अमलीडीह, रायपुर
(छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं मुद्रित

विशेष- इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिये गए विचार, लेखकों के अपने है। इसमें संपादक / मुद्रक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में संपादक / मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा। इस पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद के लिए सुनवाई क्षेत्र रायपुर न्यायालय होगा।

नया आशियाना बनाने में मिली राहत

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को गतिमान रखने के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में पिछले तीन वर्षों में लिए गए नये फैसलों ने रियल एस्टेट कारोबार को नया बूम दिया है। 6

पग-पग आगे बढ़ी जिंदगी 8

सरकार दिव्यांगजन के द्वार पहुंचकर दूर कर रही उनके जीवन का अंधेरा...

भारत में 93 लाख महिलाएं दिव्यांग 12

डाउन सिंड्रोम जो जन्म से पहले ही बच्चे को हो जाती है ...

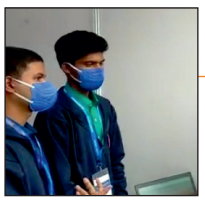

छात्रों का प्रोजेक्ट रहा राष्ट्रीय स्तर पर अव्वल 15

फसलों के बीच में उगे खरपतवार की पहचान और निदान में मदद...

कोडार जलाशय में इको पर्यटन केन्द्र 25

सैलानियों को मिली टेटिंग एवं बोटिंग की सुविधा...

छत्तीसगढ़ ने बनाया 1 और कीर्तिमान 26

समावेशी विकास में देश के 5 बड़े राज्यों में छत्तीसगढ़ भी...

ओमिक्रॉन को लेकर केन्द्र की सलाह 32

भारत सरकार ने लोगों के लिए सलाह जारी की है...

उमेश के बंसी
(प्रबंध संपादक)

अनुमान का आधार क्या?

सच कड़वा होता है जब संस्था या व्यक्ति यह मान लिये रहता है कि वह जो सोच रहा है वहीं सच है।हकीकत में सच वहीं नहीं होता है जो व्यक्ति या संस्था सोचते हैं,मानते हैं। सच वह भी होता है जो संस्था के या संस्था के बाहर लोग कहते हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद ने कहा है कि मुझे नहीं लगता है कि कांग्रेस को अगले लोकसभा चुनाव में 500 सीटें मिलेंगी। यह उनका अनुमान है। इस अनुमान का कुछ तो आधार है। अनुमान का आधार यह है कि पिचले दो लोकसभा चुनाव में कांग्रेस सौ से कम सीटें जीती हैं।जो दल दो चुनावों में 100 सीटें भी नहीं जीत पाती है, उससे कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वह तीसरे चुनाव में तीन सौ से ज्यादा सीटें जीतेगी। तीन सौ सीटें नहीं जीतने का मतलब यह है कि कांग्रेस की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह अपने दम पर सरकार बना ले। अपने दम पर सरकार तो तब ही बनती है जब तीन सौ से ज्यादा सीटें जीते। गुलामनबी आजाद यह कह रहे है कि कांग्रेस तीन सौ सीटें नहीं जीतेगी तो गलत कहां कह रहे हैं। वह सच कर रहे हैं। कांग्रेस तीन सौ सीटें तब ही जीतेगी जब वह सभी सीटों पर चुनाव लड़े। वर्तमान राजनीतिक स्थिति ऐसी नहीं है कि कांग्रेस सभी सीटों पर अकेले चुनाव लड़े। उसे कई राज्यो में सीटें दूसरे सहयोगी दलों के लिए छोड़ी पड़ेगी। वह 245 सीटें छोड़कर तीन सौ सीटों पर भी चुनाव लड़ सकती है तो वह तीन सौं की तीन सौ सीटें तो जीत नहीं सकती देश में माना जाता है कि कांग्रेस 200 सीटों पर अकेल लड़ सकती है। बीकी सीटों को उसे दूसरे दलों के लिए छोड़ा पडेगा यदि भाजपा को हराना है। यह भी हकीकत है कि कांग्रेस उन राज्यो में पूरी सीटें जीन नहीं पाती हैं जहां उसकी सरकार है। पूरे देश में चुनाव लड़े के लिए पैसा भी बहुत लगता है। इतना पैसा विपक्ष में रहने वाले दलों को मिलता नहीं है. सत्ता न होने के कारण कई नेता पाटी छोड़ कर जा रहे हैं। इसका भी पार्टी पर न्यूनाधिक असर होता है। ममता बैनर्जी अलग से कांग्रेस के लिए परेशानी का सबब बनी हुई हैं। वह कांग्रेस के बगैर भाजपा का विकल्प बनाना चाहती हैं। जबकि देश में धारणा यही है कि बिना कांग्रेस के आज तक राष्ट्रीय विकल्प नहीं बना है, इसलिए ममता बैनर्जी असफल होंगी। ममता बैनर्जी भले ही असफल हो जाए लेकिन वह जितना नुकसान कांग्रेस को पहुंचाएगी उससे भी कांग्रेस को सीटों को नुकसान तो होगा ही। गुलामनबी आजाद सभी स्थितियों को देख रहे हैं तथा वह जो कह रहे हैं वह एक अनुभवी नेता का कथन है। इससे सबक लेकर कांग्रेस की स्थिति को सुधारा जा सकता है। दो साल का वक्त है अभी। इस दौरान बहुत कुछ हो सकता है। यदि कांग्रेस नबी के सच को स्वाकार कर अपनी स्थिति सुधारने के लिए गंभीरता से प्रयास करे।

दिव्यांगजनों के कल्याण के उत्कृष्ट कार्यों के लिए तीन राष्ट्रीय पुरस्कार

राष्ट्रपति के हाथों छत्तीसगढ़ की महिला एवं बाल विकास मंत्री भेंड़िया ने ग्रहण किया अवार्ड

छत्तीसगढ़ को मिले 3 राष्ट्रीय पुरस्कार

दिव्यांगजनों के कल्याण के उत्कृष्ट कार्यों के लिए छत्तीसगढ़ को तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है। अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक गरिमामय कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ को यह अवार्ड प्रदान किए। छत्तीसगढ़ की महिला एवं बाल विकास मंत्री अनिला भेंड़िया ने राष्ट्रपति के हाथों ये पुरस्कार ग्रहण किए। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए सभी श्रेणियों के विजेताओं को बधाई देते हुए आगे भी दिव्यांगजनों के हित में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

बेस्ट ब्रेल प्रेस की श्रेणी में बिलासपुर में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित ब्रेल प्रेस को उत्कृष्ट कार्यों के लिए, स्थानीय निकाय की श्रेणी में नया रायपुर, अटल नगर विकास प्राधिकरण को विकलांग व्यक्तियों के लिए अवरोध मुक्त वातावरण के निर्माण के उत्कृष्ट कार्य के लिए और दिव्यांगजन को स्वरोजगार के लिए सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता और प्लेसमेंट अधिकारी/एजेंसी की श्रेणी में निजी या गैर-सरकारी संगठन या कार्यालय के लिए समता कॉलोनी रायपुर के नुक्कड़ टी कैफे वेंचर्स एलएलपी को सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों को ब्रेल लिपि में पाठ्य पुस्तक, साहित्य एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों के साथ ही सुगम्य पुस्तकालय अंतर्गत ई-पुस्तकालय में ऑनलाइन शिक्षण में उल्लेखनीय कार्य के लिए ब्रेल प्रेस बिलासपुर को नेशनल अवार्ड मिला है। बिलासपुर स्थित ब्रेल प्रेस ने दृष्टिबाधितों के लिए पाठ्य सामग्री, साहित्य तैयार करने के साथ निर्वाचन हेतु मतपत्र तैयार किया हैं। इसके साथ ही ब्रेल प्रेस की दृष्टिहीनों के लिए ऑनलाइन पुस्तकालय की सुविधा से विद्यार्थियों को कोरोना काल में बहुत मदद मिली है। इसके अलावा नवा रायपुर अटल नगर में दिव्यांगजनों के लिए सड़क, भवन, सार्वजनिक स्थल तथा अन्य स्थानों पर बाधारहित वातावरण निर्माण करने, दिव्यांगजनों के लिए शौचालय निर्माण आदि कार्यों के लिए नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण को राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है। साथ ही समता कॉलोनी रायपुर में नुक्कड़ टी कैफे वेंचर्स, एल.एल.पी. द्वारा श्रवण बाधित दिव्यांग व्यक्तियों को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए नुक्कड़ टी कैफे का संचालन कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। इसमें श्रवण बाधित व्यक्तियों द्वारा जनसामान्य को अपनी सेवाएं दी जा रही है। समाज में दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति सकारात्मक वातावरण के दिशा में उल्लेखनीय कार्य के लिए उन्हें भी राष्ट्रीय पुरस्कार पुरस्कार प्रदान किया गया।

नया आशियाना बनाने में मिली राहत

> छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को गतिमान रखने के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में पिछले तीन वर्षों में लिए गए नये फैसलों ने रियल एस्टेट कारोबार को नया बूम दिया है। राज्य में गरीब और मध्यम वर्गों को अपना आशियाना बनाने में काफी सहुलियत मिली है, वहीं राज्य शासन द्वारा रियल एस्टेट बिजनेस को बढ़ावा देने के लिए कई नये प्रावधान किए गए हैं। ऑनलाईन पंजीयन सुविधा, निर्धारित समय अवधि में रियल एस्टेट प्रोजेक्ट की स्वीकृति दी जा रही है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की पहल पर राज्य सरकार ने 5 डिसमिल तक के छोटे भू-खण्डों की खरीद-बिक्री पर लगी रोक को हटाया। सम्पत्तियों की गाईड-लाईन दरों में 30 प्रतिशत की कमी की गई। भूमि नामांतरण और डायवर्सन की प्रक्रिया को पूर्व की अपेक्षा अब ज्यादा आसान किया गया है। छत्तीसगढ़ शासन ने महिलाओं को पंजीयन शुल्क में एक प्रतिशत की छूट प्रदान की है। दस्तावेजों के पंजीयन के लिए सिंगल विन्डों प्रणाली से अनुमति और अनापत्ति प्रमाण पत्र देने की प्रक्रिया आसान बनाई बना दी गयी है। छत्तीसगढ़ सरकार के फैसलों से राज्य में अब आम आदमी और कमजोर तबके लोग भी छोटे और मध्यम भू-खण्डों की खरीदी-बिक्री कर रहे हैं। राज्य के पंजीयन कार्यालयों में आधुनिकीकरण और नई सुविधाएं जुटाई

गई है। इन कार्यालयों में ऑनलाईन पंजीयन ई-स्टाम्पिंग की सुविधा दी गई है। इसी प्रकार जमीनों और मकानों का पंजीयन तेजी से कराने के लिए सॉफ्टवेयर में संशोधन किया है। पंजीयन शुल्क भुगतान के लिए ऑनलाइन भुगतान सुविधा सहित स्वाइप मशीन अधिकांश पंजीयन कार्यालयों में उपलब्ध कराई गई है। राजस्व न्यायालयों को भी आधुनिक बनाया जा रहा है। न्यायालयों में ऑनलाईन प्रकरणों का पंजीयन के साथ ही जमीन और भवन संबंधी दस्तावेजों का डिजिटलाईजेशन किया जा रहा है। पंजीयन विभाग में एक जनवरी 2019 से अब तक करीब दो लाख 75 हजार से ज्यादा छोटे भू-खंडों के क्रय विक्रय के दस्तावेजों का पंजीयन किया गया है। वर्ष 2020-21 में 1589.42 करोड़ का राजस्व अर्जित किया। वित्तीय वर्ष 2021-22 में अक्टूबर माह तक 902.79 करोड़ रूपए से ज्यादा का राजस्व अर्जित किया जा चुका है।

राज्य शासन द्वारा जनहित में निर्णय लिया जाकर, दस्तावेजों के बाजार मूल्य निर्धारण करने वाले गाईडलाईन की दरों में 25 जुलाई 2019 से 30 प्रतिशत की कमी को वर्ष 2020-21 एवं वर्ष 2021-22 के लिए भी यथावत रखा गया है। संपत्ति के बाजार मूल्य में कमी के साथ ही संपत्ति के खरीदी बिक्री में राहत प्राप्त होने से मध्यमवर्ग के लिए भूमि-मकान खरीदना आसान हुआ है। इसी प्रकार 75 लाख कीमत तक के मकान-भवन के विक्रय संबंधी विलेखों पर अगस्त, 2019 से पंजीयन शुल्क की दर में 2 प्रतिशत की रियायत को वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के लिए बढ़ाया गया है।

कोविड-19 से संक्रमण की सुरक्षा को देखते हुए पंजीयन हेतु ऑनलाइन अपॉइंटमेंट स्लॉट बुकिंग को अनिवार्य किया गया है। अपॉइंटमेंट प्राप्त पक्षकार निर्धारित समय में ही पंजीयन कार्य हेतु उपस्थित होते हैं।

इस व्यवस्था के तहत कोविड-19 महामारी के दौरान भी पंजीयन की सुविधा प्रदान की गई है। दस्तावेज पंजीयन के साथ ही साथ दस्तावेज नकल एवं खोज हेतु भी अपॉइंटमेंट बुकिंग प्रारंभ की गई है। पक्षकार द्वारा पंजीयन फीस का भुगतान भी ऑनलाइन किया जा सकता है।

पग-पग आगे बढ़ी जिंदगी

पुनर्वास केन्द्र ने हजारों जीवन में जगाई नई आस

राज्य सरकार दिव्यांगजन के द्वार पहुंचकर दूर कर रही उनके जीवन का अंधेरा

दो साल का मासूम दौड़कर घर की ओर आ रहा था, उसी समय गाड़ी ने उसे टक्कर मार दी, जिससे उसका एक पैर कट गया। सूरजपुर जिले के उदयपुर ब्लॉक में रहने वाला पवन अब 6 साल का हो चुका है। एक पैर के सहारे घिसट कर चलता है। परिवार वालों के मन में उसके भविष्य को लेकर कई तरह की आशंकाएं और चिंता है। लेकिन राजधानी के माना कैम्प स्थित पुनर्वास केन्द्र ने उनकी चिंता दूर कर दी है। यहां आकर पवन को नकली पैर के सहारे चलते-दौड़ते देखकर अब उनके मन में नई आस जगी है। पवन के दादा कोहित राम ने बताया कि पवन अपने हम उम्र बच्चों के साथ खेल भी नहीं पाता था। जब से पुनर्वास केन्द्र में उसको नकली पैर लगा है, वह खुशी से दौड़ने की कोशिश करता है। उन्होंने कहा कि पवन के भविष्य की उन्हें बहुत चिन्ता थी, लेकिन पैर लगने के बाद उसे चलते देखकर उसके जीवन को लेकर संतोष आ गया है।

नन्हें पवन की तरह हर उम्र और वर्ग के कई जीवन को समाज कल्याण विभाग द्वारा माना कैम्प में संचालित पुनर्वास केन्द्र 'फिजिकल रिफरल रिहैबिलिटेशन सेंटर' से नई उम्मीद मिली है, और उनका जीवन तेजी से आगे बढ़ने लगा है। यहां दिव्यांगजन को कृत्रिम हाथ-पैर,कैलीपर्स,सहायक उपकरण, कस्टम व्हील चेयर, बैसाखी, एल्बो क्रच, स्पाइनल ब्रेस, सी.पी. चेयर निःशुल्क बनाकर देने के साथ फिजियोथेरेपी और स्पीच थेरेपी की सुविधा दी जा रही है। केन्द्र ने अब तक 4 हजार से अधिक उपकरण प्रदान कर कई दिव्यांग जन के जीवन को संवारकर सुविधाजनक बनाया है।

दिव्यांग जन के जीवन को नई दिशा देने और उन्हें हाथों-पैरों का सहारा देने के लिए समाज कल्याण विभाग ने दूर-दराज क्षेत्रों में उनके चिन्हांकन का काम शुरू किया है। इसकी शुरूआत विगत अक्टूबर माह में दूरस्थ क्षेत्र सरगुजा में शिविर लगाकर की गई। यहां विशेषज्ञों द्वारा 140 दिव्यांग हितग्राहियों को चिन्हांकित किया गया। इनमें से हाथ और पैरों की अलग-अलग अक्षमता वाले मरीज थे। अब इन्हें 155 क्रत्रिम उपकरण निःशुल्क प्रदान कर उनकी जीवन में फिर से गति लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए 140 दिव्यांगजन में 65 हितग्राहियों के नकली पैर तैयार करने के लिए पीआरआरसी सेंटर लाकर नाप लिया जा रहा है। पहले बैच में जब 14 दिव्यांगों को कृत्रिम पैर लगाए गए तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। उनमें जीवन जीने की फिर से ललक जाग उठी। विशेषज्ञों के प्रशिक्षण और निदेर्शों से वे एक दिन में ही पग-पग चलने लगे।

पहले बैच में पवन की तरह सरगुजा के लैंगा गांव से आए सातवीं कक्षा के छात्र श्री रामनारायण ने बताया कि जन्म से ही उनका एक पैर खराब है। लाठी की सहायता से वह स्कूल जाता है। कृत्रिम पैर लग जाने से अब उसे अच्छी तरह चलते बन रहा है। अब स्कूल के अलावा वह कही भी बिना परेशानी आना-जाना कर सकता है। इसी तरह नारायणपुर गांव के रहने वाले सातवीं कक्षा के छात्र श्री छत्रपाल का भी एक पैर जन्म से ही खराब था। छत्रपाल के नाना श्री तेजराम यादव ने बताया कि छत्रपाल का एक पैर खराब होने के कारण उसे चलने में बहुत दिक्कत होती है। अब सरकार की मदद से पैर बन जाने से उसका भविष्य बन गया है। इसी तरह उदयपुर के सरगंवा निवासी 50 वर्षीय जयकरण सिंह ने बताया कि 2010 में एक्सीडेंट में उनका पैर काटना पड़ा। तब से वे बैसाखी के सहारे चलते हैं। नकली पैर लग जाने से अब वे अच्छी तरह अपना काम कर सकते हैं।

लखनपुर के श्री रतन सिंह ने बताया कि वे खेती-किसानी का काम करते हैं। कुछ साल पहले हुई दुर्घटना में उनका पैर काटना पड़ा। उनके क्षेत्र के जनपद पंचायत में शिविर लगने की जानकारी उन्हें मिली तो वह तुरंत पहुंच गए। रायपुर की टीम ने उनके पैर का नाप लिया। अब पैर लग गया है, और वह अच्छी तरह चल पा रहे हैं। इसी तरह उदयपुर निवासी श्री हीरालाल देवांगन ने बताया कि 8-10 साल की उम्र में रेल्वे लाईन में उनका पैर कटा गया था। समाज कल्याण विभाग ने पैर बनाकर दिया है। साथ ही ट्रेनिंग भी दी है, इससे वे अच्छी तरह चलने लगे है। दिव्यांगजन को रायपुर लाने-लेजाने से लेकर उनके खाने रहने की व्यवस्था भी राज्य सरकार द्वारा निःशुल्क की गई। सभी दिव्यांगजन ने राज्य सरकार आभार जताते हुए कहा कि सरकार ने संवेदनशीलता के साथ उनके द्वारा खुद पहुंचकर उनकी सहायता कर रही है।

भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ के अधिवेशन में शामिल हुए कृषि मंत्री

कोरोना काल में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा किए गए सहयोग की बैंक अधिकारी संघ ने की सराहना, सरकार को दिया धन्यवाद

बैंक बचाओ देश बचाओ की मुहिम में

छत्तीसगढ़ सरकार बैंकों के साथः कृषि मंत्री चौबे

> कृषि एवं जल संसाधन मंत्री रविन्द्र चौबे भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ (भोपाल वृत्त) रायपुर के आंचलिक अधिवेशन में शामिल हुए। रायपुर के साइंस कॉलेज परिसर स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित अधिवेशन को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री चौबे ने कहा कि सार्वजनिक उपक्रम और संस्थान देश की ताकत है।

इन संस्थाओं की स्थापना देश के विकास को गति देने के लिए की गई थी। समय के साथ देश के विकास में इन संस्थाओं ने अपनी भूमिका साबित भी की। कृषि, उद्योग, व्यापार सहित कई क्षेत्रों में विकास का सिलसिला आगे बढ़ा। ऐसे महत्वपूर्ण उपक्रमों और संस्थाओं का निजीकरण देशहित में नहीं है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण भी देश को आगे बढ़ाने के लिए किया था। वर्तमान में महत्वपूर्ण उपक्रमों और संस्थाओं को निजीकरण की राह में धकेला जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार इसका विरोध करती है और बैंक अधिकारियों के साथ 'बैंक बचाओ देश बचाओ' अभियान के

समर्थन में उनके साथ खड़ी है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के विकास में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए सहयोग के लिए उनका आभार जताया।

भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ के भोपाल वृत्त की रायपुर शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में चौबे ने कहा कि छत्तीसगढ़ में बैंकों और एटीएम की संख्या में वृद्धि के साथ बैंकों ने अपनी जिम्मेदारी समझी और राज्य की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर देश के विकास की नींव रखी। उन्होंने उस समय कहा था कि बैंक देश के विकास का सबसे बड़ा माध्यम बनेंगे। उन्होंने गरीबी उन्मूलन, गरीबी हटाओ जैसे अभियान चलाकर अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य किया। उन्होंने कहा कि देश में एयर इंडिया, डाक, रेलवे और बैंक जैसी संस्थाओं पर निजीकरण का खतरा मंडरा रहा है। इनके निजीकरण को लेकर अनेक सवाल खड़े हो रहे हैं।

कृषि मंत्री श्री चौबे ने कहा कि छत्तीसगढ़ के कुल एक लाख सात हजार करोड़ रूपए बजट में से 27 हजार करोड़ रूपए केवल कृषि के लिए है। कोरोना काल में भी राज्य के बाजारों में रौनक रही। सरकार ने किसानों और श्रमिकों के हाथ में लगातार पैसा पहुंचाया। कृषि क्षेत्र, व्यापारिक, वाणिज्यिक और औद्योगिक गतिविधियां नियमित संचालित होती रहीं। इसमें भारतीय स्टेट बैंक का भी सहयोग रहा है। वित्तीय गतिशीलता से छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रही। भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ ने कार्यक्रम में राज्य की विभिन्न शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों-कर्मचारियों को कोरोना काल में सुरक्षित रखने तथा प्राथमिकता के साथ उनका टीकाकरण कराने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल और शासन को धन्यवाद दिया।

भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ, रायपुर अंचल के उप-महासचिव वाई. गोपाल कृष्णा ने छठ पर्व पर अवकाश के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार और झारखंड के बाद छत्तीसगढ़ देश का तीसरा राज्य है जिसने छठ पर्व पर अवकाश दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा स्थानीय त्यौहारों पर अवकाश देने से बैंक में कार्यरत अधिकारी-कर्मचारी भी परिवार के साथ त्यौहार मना पा रहे हैं। उन्होंने छेरछेरा पर घोषित स्थानीय अवकाश का लाभ बैंक कार्मिकों को भी देने की मांग की। अखिल भारतीय बैंक अधिकारी परिसंघ और अखिल भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी फेडरेशन के महासचिव सौम्या दत्ता, भारतीय स्टेट बैंक अधिकारी संघ, भोपाल वृत्त के अध्यश्र मदन जैन, महासचिव संजीव सभलोक, रायपुर अंचल के अध्यक्ष विजय येचुरी, रायपुर आंचलिक कार्यालय के उपमहाप्रबंधकद्वय एस.व्ही. राधाकृष्णा राव और गुणीन्द्र शाह तथा रायपुर जिले की मुख्य स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अधिकारी डॉ. मीरा बघेल सहित भारतीय स्टेट बैंक के अनेक अधिकारी और संघ के पदाधिकारी भी कार्यक्रम में मौजूद थे।

भारत में 93 लाख महिलाएं दिव्यांग

उन्हीं में से एक बीमारी है डाउन सिंड्रोम (Down syndrome), जो जन्म से पहले ही बच्चे को हो जाती है।

भारत में 93 लाख महिलाएं हैं दिव्यांग

2016 की जनगणना के मुताबिक, भारत में लगभग 2.68 करोड़ से ज्यादा दिव्यांग थे। जिसमें से 1.5 करोड़ पुरुष और 1.18 करोड़ महिलाएं थीं। उस समय ये तादाद देश की कुल आबादी की 2.1 % बताई गई थी। भारत में हर साल 23 हजार से 29 हजार बच्चों का जन्म डाउन सिंड्रोम के साथ होता है। भारत में 1000 बच्चों में से 1 बच्चा डाउन सिंड्रोम के साथ पैदा होता है।

एक खेल की वजह से मिला नाम 'हैंडीकैप'

हैंडीकैप (Handicap) शब्द 'hand in cap' से बना है। 20वीं शताब्दी में Hand in cap नाम का गेम था, जो उस समय का काफी मशहूर गेम था। इस खेल में लोग एक-दूसरे से चीजें बदला करते थे। माना जाता है ये शब्द 1653 के बाद गेम 'hand in cap' को शॉर्ट कर उसी के नाम से बना। Handicap शब्द का मतलब 1915 तक शारीरिक अक्षमता से जुड़ा नहीं था। दिसंबर 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में विकलांग शब्द की जगह दिव्यांग कहा था। प्रधानमंत्री के सुझाव के बाद हिंदी भाषा में विकलांग की जगह अब 'दिव्यांग' शब्द चलन में है।

1 क्रोमोजोम ज्यादा हो तो शुरू होती है समस्या

दिल्ली एम्स की महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. तारा सिन्हा बताती हैं कि डाउन सिंड्रोम एक जेनेटिक डिसऑर्डर है, जो क्रोमोजोम की वजह से होती है। हर बच्चे में 46 क्रोमोजोम (DNA का एक हिस्सा) होते हैं। 23 मां से मिलते हैं। 23 पिता से आते हैं। अगर बच्चे में 47 क्रोमोजोम होते हैं तो उसे डाउन सिंड्रोम होता है। अगर मां की उम्र 35 साल से ज्यादा और पिता की उम्र 40 साल से ज्यादा है तो भी डाउन सिंड्रोम होने के चांसेज बढ़ जाते हैं। परिवार में और भी किसी को डाउन सिंड्रोम है, तो भी ये हो सकता है। डाउन सिंड्रोम का पूरी तरह कोई इलाज नहीं है। ये एक सिंड्रोम है। यानी कई लक्षणों का मिश्रण है। इसमें सिम्प्टमेटिक ट्रीटमेंट करना पड़ता है। अलग-अलग थेरेपी से इलाज किया जाता है। जैसे फिजिकल थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और व्यवहारिक थैरेपी।

> हर साल 3 दिसंबर को वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे मनाया जाता है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक मुहिम का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य डिसेबल व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाना और अन्य लोगों में उनके प्रति सहयोग की भावना का विकास करना है। इसकी शुरूआत 1992 में से हुई थी। विश्व स्तर पर 1 बिलियन से अधिक लोग किसी न किसी रूप से दिव्यांगता का शिकार है।

दिव्यांग बच्चों में होती है एकाग्रता की कमी

डाउन सिंड्रोम से पीड़ित बच्चों का व्यवहार सामान्य बच्चों की तुलना में थोड़ा अलग होता है। इन बच्चों का मानसिक विकास दूसरे बच्चों की तुलना में धीरे होता है। एकाग्रता की कमी होने के कारण डाउन सिंड्रोम से पीड़ित बच्चों में सीखने की क्षमता भी कम होती है। इस बीमारी में 10 साल का बच्चा 5 साल के बच्चे जैसा बर्ताव करता है।

दिव्यांग बच्चों का कम होता है वद्ध

दिव्यांग बच्चों का वद्ध कम होता है और समय के साथ और कम होता जाता है। बोलने में दिक्कत आती है। शारीरिक विकलांगता में इंसान के शरीर का कोई हिस्सा काम करना बंद कर दे या फिर शरीर का एक या उससे अधिक भाग सामान्य से अलग होता है। वहीं, मानसिक विकलांगता में किसी इंसान का शरीर तो आम इंसान की तरह होता है। लेकिन उसका दिमाग कम काम करता है। इस बीमारी से पीड़ित बच्चे सामान्य बच्चों से अलग व्यवहार करते हैं।

डाउन सिंड्रोम के लक्षण

- फ्लैट चेहरा
- छोटा सिर और कान
- छोटा कद
- सिर, कान और उंगलियां छोटी और चौड़ी होती हैं।

बच्चों का ठीक से नहीं हो पाता है विकास

बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. ललिता विश्वास कहती हैं कि डाउन सिंड्रोम पीड़ित बच्चों में लक्षण हल्के से लेकर गंभीर तक हो सकते हैं। ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में बैठना, चलना या उठना सीखने में ज्यादा समय लेते हैं। डाउन सिंड्रोम से पीड़ित बच्चों को जन्म से ही हार्ट की बीमारी, बहरापन, कमजोर आंखें, मोतियाबिंद, नींद के दौरान सांस लेने में दिक्कत, दिमागी समस्याएं, मोटापा, दांतों के विकास में देरी आदि हो सकती है।

कई थेरेपी से होता है बच्चों का इलाज

एक्सपर्ट्स की मानें तो डाउन सिंड्रोम का कोई इलाज नहीं है। लेकिन कई संस्था और स्कूल है, जो इससे पीड़ित लोगों को समझने में और उनके परिवार की मदद करने में मदद करते हैं। एनडीएसएस (राष्ट्रीय डाउन सिंड्रोम समाज) में 300 से अधिक स्थानीय डाउन सिंड्रोम संगठन हैं, जो अपने स्थानीय क्षेत्र में डाउन सिंड्रोम से पीड़ित लोगों की मदद करते हैं।

डाउन सिंड्रोम से पीड़ित बच्चों के लिए काम करने वाली संस्था स्नेहा धारा फाउंडेशन की फाउंडर डॉक्टर गीतांजली सारंग कहती हैं, 'हमारी संस्था में हर दिन मेंटल हेल्थ की परेशानी झेल रहे बच्चे आते हैं। यहां आए हुए बच्चों को अलग-अलग तरीके से इलाज किया जाता है। कई बच्चे मेंटली रिटार्डेड, चाइल्डहुड ट्रामा तो कई18 साल से कम उम्र के बच्चों ने बचपन में ही क्राइम किया होता है। इन बच्चों में अलग-अलग थेरेपी से इलाज किया जाता है। इनको इनके पसंद की एक्टिविटी करने को कहा जाता है।

बड़े भी करते हैं बच्चों जैसा व्यवहार

गीतांजली बताती है, 'हमारी संस्था रोड शो, थियेटर, ड्रामा, म्यूजिक, ड्रमिंग के साथ लोगों को अवेयर भी करती है कि ये बच्चे समाज से अलग नहीं है। यह संस्था एक ट्रस्ट से चलती है। इसमें कई तरह से फंडिंग आते है। ताकि कभी ऐसा न हो कि किसी बच्चे को पैसे के अभाव में इलाज न हो।

कई ऐसे भी लोग होते हैं जिनके पास पैसा रहते हुए हिम्मत नहीं होती कि वे अपने बच्चों का इलाज करवा सकें।

वह बताती हैं, '18 साल से 42 साल में कई ऐसे लोग भी हैं जो खुद से ब्रश तक नहीं कर सकते। ऐसे बच्चों को बाहर ले जाना बहुत बड़ा टास्क होता है। जब हम ऐसे बच्चों को पार्क, मॉल कहीं भी बाहर लेकर जाते हैं तो लोग कहते हैं कि ऐसे बच्चों को बाहर लेकर मत आओ, इन्हें घर में रखें। तो अब हम कई बड़े आर्टिस्ट को अपनी संस्था में बुला लेते हैं। अवेयरनेस की वजह से कई जगह लोग यह भी कहते हैं कि ऐसे लोगों पर भूत-प्रेत का साया होता है। देश में इतनी तरक्की होने के बाद भी लोग मेंटल हेल्थ इश्यू को समझ नहीं पाते।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून में बैंकों को इजाजत दी थी कि 1 जनवरी, 2022 से मुफ़्त लेनदेन की मासिक सीमा से अधिक बार एटीएम इस्तेमाल करने पर लोगों से वे ज्यादा शुल्क वसूल सकते हैं.

नए साल से एटीएम से पैसा निकालना महंगा

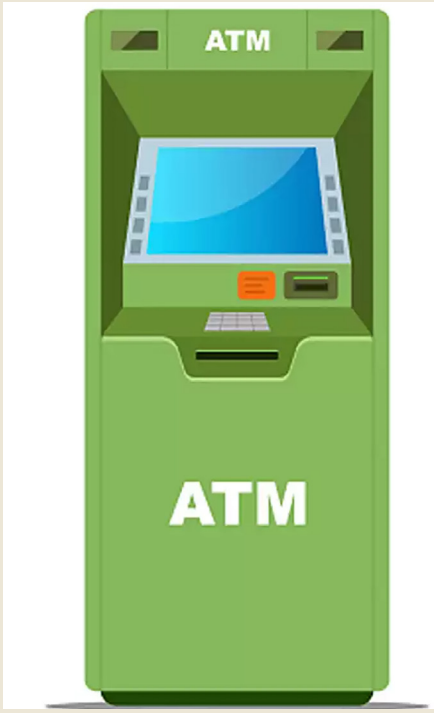

एक्सिस बैंक ने इस बारे में कहा है, ह्लआरबीआई के दिशानिदेर्शों के अनुसार, एक्सिस या दूसरे बैंकों के एटीएम से मुफ़्त लेनदेन की सीमा से अधिक बार लेनदेन करने पर 1 जनवरी, 2022 से 21 रुपये के साथ जीएसटी का भुगतान करना होगा.ह्व अभी तक लिमिट के पार जाने पर 20 रुपए और जीएसटी का भुगतान करना होता है. इससे पहले जून में अपने एक आदेश में आरबीआई ने कहा था, ह्लउच्च इंटरचेंज शुल्क की भरपाई करने और बढ़ी हुई लागत को देखते हुए बैंकों को अपने ग्राहकों से 21 रुपए तक शुल्क वसूलने की इजाजत है. यह वृद्धि 1 जनवरी, 2022 से प्रभावी होगी.ह्व

असल में, आरबीआई ने 1 अगस्त से प्रभावी व्यवस्था के तहत, बैंकों को हर वित्तीय लेनदेन पर इंटरचेंज शुल्क को 15 रुपए से बढ़ाकर 17 रुपए कर दिया था. वहीं पैसे से इतर लेनदेन के मामले में इसे 5 के बजाय बढ़ाकर 6 रुपये किया गया था. ग्राहक जिस बैंक में खाता है, उसके एटीएम से हर महीने पांच बार मुफ़्त लेन-देन करने के योग्य हैं. दूसरे बैंकों के एटीएम के मामले में महानगरों में हर महीने मुफ़्त लेनदेन की यह सीमा पहले की तरह तीन रहेगी. वहीं अन्य शहरों में पांच बार मुफ़्त लेनदेन पहले की तरह होते रहेंगे.

छात्रों का प्रोजेक्ट रहा राष्ट्रीय स्तर पर अव्वल

फसलों के बीच में उगे खरपतवार की पहचान और निदान में मिलेगी मदद

महासमुंद के नर्रा गांव के किसान पुत्रों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित प्रोजेक्ट का प्रदर्शन किया

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आयोजित प्रतियोगिता के जारी परिणाम में देश के टॉप 20 प्रोजेक्ट में छत्तीसगढ़ के छात्रों के फसलों के बीच में उगे खरपतवारों को पहचानने के प्रोजेक्ट का चयन किया गया है। राज्य के महासमुंद जिले के शासकीय कुलदीप निगम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नर्रा के छात्र वैभव देवांगन और धीरज यादव द्वारा तैयार किया गया है।

केन्द्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्वनी वैष्णव ने नई दिल्ली के भारतीय पयार्वास सेंटर में आयोजित समारोह में छत्तीसगढ़ के इन दोनों छात्रों को मेडल और प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इन छात्रों द्वारा भारतीय पयार्वास सेंटर नई दिल्ली में 29 और 30 नवंबर को आयोजित प्रदर्शनी में अपने प्रोजेक्ट का प्रदर्शन किया गया। अंतिम रूप से विजेता घोषित करने के पहले दोनों छात्रों का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विशेषज्ञ द्वारा ऑनलाईन साक्षात्कार लिया गया। प्रदर्शनी का अवलोकन केन्द्रीय राज्यमंत्री सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने भी किया। इस अवसर पर विभाग के सचिव और डिजीटल इंडिया के सीईओ अभिषेक सिंह और अन्य अधिकारी मौजूद थे।

इस विद्यालय के व्याख्याता सुबोध कुमार तिवारी ने लॉकडाउन के समय छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का अध्यापन ऑनलाईन कराया। छात्रों ने इस तकनीक के उपयोग से कृषि प्रधान राज्य के किसानों की सुविधा के लिए प्रोजेक्ट बनाये।

ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले किसान पुत्र छात्र वैभव देवांगन और धीरज यादव ने फसलों के बीच उगे खरपतवारों को पहचानने का सॉफ्टवेयर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के उपायोग से बनाया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आयोजित प्रतियोगिता एक नजर में- कुल 52 हजार 628 छात्र पंजीकृत हुए। प्रथम चरण में 11 हजार 466 छात्रों ने प्रशिक्षण लिया। देश के 35 राज्य से 2536 शिक्षकों ने लिया प्रशिक्षण। पूरे देश से 2441 छात्रों से 2704 आईडियाज जमा किए गए। प्रथम चरण का परिणाम 12 जनवरी 2021 को जारी किया गया, जिसमें द्वितीय चरण के लिए 125 छात्रों की सूची जारी की गई। बाल दिवस की पूर्व संध्या पर 13 नवम्बर को टॉप 60 के परिणामों की सूची जारी की गई, जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुंद जिले के सरकारी स्कूल नर्रा के दो प्रोजेक्टों का चयन हुआ। इसके बाद आज अंतिम चरण में फायनल टॉप-20 में छत्तीसगढ़ की एक प्रोजेक्ट का चयन किया गया।

उल्लेखनीय है कि सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम ए.आई. फॉर यूथ में देश के केवल सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं को नवीनतम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक से रू-ब-रू कराने और उनके द्वारा समाज की समस्याओं का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) के उपयोग से समाधान ढूढंने के लिये यह कार्यक्रम चलाया गया।

सियासत का पंचनामा

उत्तरप्रदेश में नए समाजवादी का उद्गम

> समाजवादी पार्टी भारत का एक प्रमुख राजनैतिक दल है। यह भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में सक्रिय है। यह 4 अक्टूबर 1992 को स्थापित किया गया था। समाजवादी पार्टी के संस्थापक व संरक्षक मुलायम सिंह यादव, उत्तर प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री और देश के पूर्व रक्षा मंत्री रह चुके है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव वर्तमान में इस दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

समाजवादी पार्टी मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में सक्रिय है। वर्तमान समय में इसके समर्थन में बड़े पैमाने पर मुसलमान तथा कुछ एक पिछड़ी जातियाँ हैं। समाजवादी पार्टी ने लोकसभा और देश के अन्य राज्यो के विधानसभा चुनाव लड़ चुका है। हालांकि इसकी सफलता मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में ही है। 2003 में मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को 7 सीटें प्राप्त हुई। यह राज्य में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी थी। 16वीं लोकसभा में, इसकि वर्तमान में 5 सदस्य है। 2005 में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बंगारप्पा समाजवादी पार्टी में शामिल होने के लिए भाजपा से इस्तीफा दे दिया। वह सफलतापूर्वक समाजवादी के टिकट पर अपने लोकसभा सीट, शिमोगा, से विजयी हुए। 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में सपा को केवल 96 सीटें मिली, जबकि 2002 में 146 सीटें जीती थी। परिणामस्वरूप, मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव अपने प्रतिद्वंद्वी मायावती, बसपा (जो 207 सीटों के बहुमत जीता) नेता, मुख्यमंत्री के रूप में में शपथ ग्रहण के साथ ही इस्तीफा देना पडा। 2012 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में सपा को 224 सीटे मिली। समाजवादी पार्टी राममनोहर लोहिया और चौधरी चरण सिंह के आदर्शों में चलने में विश्वास रखती है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय नेता मुलायम सिंह भारत सरकार में रक्षा मंत्री रह चुके हैं और राष्ट्रीय राजनीति के सबसे बड़े समाजवादी नेता है जिनका सम्मान सभी अन्य पार्टी के नेता करते हैं। समाजवादी पार्टी संसद में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में एक राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस और भाजपा के बीच एक समान दूरी बनाए रखने की कोशिश करता है। तीसरी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी होने के लिए समाजवादी पार्टी की कोशिश जारी है। समाजवादी पार्टी की विचारधारा समाजवादी है। समाजवादी पार्टी की लोकप्रियता उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक है।

- तीन करोड़ 40 लाख राशन कार्ड बनवाया और उस पर पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की तस्वीरें थीं.
- अखिलेश यादव सरकार की प्रमुख समाजवादी आवास स्कीम शुरू की थी इस योजना को उत्तर प्रदेश में तरजीह देने की जगह राज्य में तत्कालीन अखिलेश यादव सरकार ने समाजवादी आवास योजना को लॉन्च किया था.
- पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की सबसे बड़ी योजना 'समाजवादी पेंशन योजना' लांच की गई थी।
- अखिलेश यादव सरकार ने 2014 में इस कमेटी का गठन किया था. इस कमेटी की सदस्य उनकी पत्नी डिंपल यादव थीं. इस योजना के जरिए प्रदेश को कुपोषण मुक्त बनाने का दावा किया गया था. प्रदेश में मां और उसके तीन साल तक के बच्चों में कुपोषण की रोकथाम के लिए चलाई जा रही योजनाओं पर निगरानी रखने के लिए इस कमेटी का गठन किया गया था.
- यूपी के वीआईपी शहरों की लिस्ट में इटावा, कन्नौज और आजमगढ़ की जगह गोरखपुर, मथुरा, अयोध्या और वाराणसी थे. बता दें कि इटावा पूर्व सीएम अखिलेश यादव का गृह जिला है. जबकि कन्नौज अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव का संसदीय क्षेत्र है. जबकि आजमगढ़ मुलायम सिंह यादव का क्षेत्र है.
- अखिलेश यादव के ड्रीम प्रोजेक्ट्स समाजवादी पार्टी के नाम से चल रही योजनाओं और सुविधाओं पर समाजवादी शब्द लिखा था
- अखिलेश सरकार की योजनाओं को कुछ जगह उसको नए रूप में आगे बढ़ाने का भी फैसला लिया है. यूपी में मेट्रो प्रोजेक्ट के तहत लखनऊ और कानपुर जैसे बड़े शहरों को ही चुना गया था।

पंजाब में त्रिकोणीय समीकरण

पंजाब में चुनावी सरगर्मियां बढ़ गई है। इस बार फिर से कांग्रेस सत्ता में वापसी चाहती है और भाजपा नए तरीके से पैतरा अपना रही। भाजपा अमरिंदर सिंह को अपने साथ लेकर चल रही है, इससे काफी फायदा होने की उम्मीद भाजपा ने लगाई है।

तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण के पूर्व मंत्री

कांग्रेस ने चरणजीत सिंह चन्नी को पंजाब का सीएम नियुक्त किया गया, वह पंजाब सरकार में तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण के पूर्व मंत्री थे। अमरिंदर सिंह के इस्तीफे के देने के बाद 19 सितंबर 2021 को उन्हें पंजाब का नया सीएम बनाया गया है। चरणजीत सिंह चन्नी चमकौर साहिब विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं। इससे पहले, वह 2015 से 2016 तक पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता थे। चरणजीत सिंह चन्नी रामदसिया सिख समुदाय से हैं और उन्हें कैप्टन अमरिंदर सिंह कैबिनेट, पंजाब में 16 मार्च 2017 को 47 साल की उम्र में कैबिनेट मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। चमकौर साहिब से तीसरी बार विधायक और अमरिंदर में ह्तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षणह्व मंत्री सिंह रहे हैं। पंजाब

3659 वोटों से हराकर निर्वाचित हुए थे

कैप्टन अमरिंदर सिंह के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे के बाद चरणजीत सिहं चन्नी को पंजाब का 27 वां सीएम घोषित किया गया है। चरणजीत सिंह चन्नी पंजाब की चमकौर साहिब सीट से कांग्रेस के विधायक हैं। उन्होंने 2012 के चुनावों में अपने विपक्षियों को 3659 वोटों से हराकर निर्वाचित हुए थे। बता दें कि चरणजीत सिंह 2015 से 2016 तक पंजाब विधानसभा में विपक्ष भी रह चुके हैं। चरणजीत सिंह चन्नी तीन बार के विधायक और राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री हैं। चरणजीत सिंह चन्नी निवर्तमान अमरिंदर सिंह कैबिनेट के तकनीकी शिक्षा मंत्री थे। उनके पास कानून और एमबीए की डिग्री के साथ एक शानदार अकादमिक साख है।

के नए चरणजीत सिंह चन्नी का जन्म 2 अस्त्र१' 1973 को इँ४', ढ४ल्लुं में हुआ था। चन्नी अभी 48 साल के हैं। पंजाब के नए सीएमचरणजीत सिंह चन्नी की पत्नी का नाम कमलजीत कौर है।

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स की पढ़ाई की

चरणजीत सिंह चन्नी का जन्म एक गरीब परिवार में पिता एस. हरसा सिंह और माता श्रीमती के घर हुआ था। अपने परिवार के साथ खरड़ आने के बाद चन्नी ने खरड़

के खालसा हायर सेकेंडरी स्कूल से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। अपनी माध्यमिक शिक्षा के बाद, उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा के लिए चंडीगढ़ के श्री गुरु गोबिंद सिंह कॉलेज में प्रवेश लिया। वहां से स्नातक करने के बाद, उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में प्रवेश लिया और सफलतापूर्वक कानून की डिग्री प्राप्त की। बाद में उन्होंने पीटीयू जालंधर से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स की पढ़ाई की और बाद में उन्होंने अपनी पीएच. डी. पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से की।

सर्वहारा वर्ग की खुशहाली के लिए सरकार प्रतिबद्ध : डॉ. डहरिया

नगरीय प्रशासन विकास एवं श्रम मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया ने कहा है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में समाज के सभी वर्गों की खुशहाली के लिए कार्य किए जा रहे हैं। किसान, मजदूरी गांव गरीब के साथ सर्वहारा वर्ग के लिए सरकार द्वारा योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि राजीव गांधी किसान न्याय योजना, गोधन न्याय योजना, राजीव गांधी कृषि मजदूर न्याय योजना, राजीव गांधी मितान क्लब, पौनी-पसारी योजना सहित तमाम स्वास्थ्य योजनाएं और शासन की अन्य कल्याणकारी

योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है इन योजनाओं से समाज के हर वर्ग का हित निहित है। डॉ. डहरिया आज यहां आरंग में मितानिन सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। डॉ. डहरिया ने इसके पहले ग्राम संडी में मितानिन एवं पंचायत प्रतिनिधि सम्मान समारोह में मितानिनों एवं पंचायत के प्रतिनिधियों का सम्मान किया। इस अवसर पर संडी ग्राम के 75 लाख से ज्यादा के निर्माण कार्यों की सौगात दी। आरंग में मितानिन प्रशिक्षण भवन बनाने 20 लाख रूपए की घोषणा की तथा डॉ. डहरिया ने बताया कि आरंग में नये सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन के लिए 2 करोड़ 50 लाख रूपए स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने कर्मचारी भवन आरंग में डॉ. अम्बेडकर की भव्य प्रतिमा स्थापित करने की भी घोषणा की।

डॉ. डहरिया ने मितानिन सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि मितानिन ग्रामीणों को स्वास्थ्य रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण को नियंत्रित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ. डहरिया ने संविधान दिवस एवं मतदान दिवस पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संविधान ने सभी वर्गों को सामाजिक-आर्थिक उन्नति के साथ-साथ हर क्षेत्र में बराबरी के साथ आगे बढ़ने का अवसर दिया है। डॉ. डहरिया कार्यक्रम के दौरान कोरोना पीड़ित परिवारों को 50-50 हजार रूपए की सहायता राशि के चेक प्रदान की और मितानिनों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

डॉ. डहरिया ने कहा कि छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है, जहां पर चिटफंड में निवेश करने वालों को उनकी राशि वापिस करने के लिए सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के हजारों लोग चिटफंड कंपनियों से परेशान थे। उन्होंने बताया कि प्रदेश में करीब 25 करोड़ की राशि चिटफंड कंपनियों के निवेशकों को वापिस करा दी गई है।

नगरीय प्रशासन एवं विकास तथा श्रम मंत्री डॉ शिवकुमार डहरिया ने दुर्ग जिले में नगर पालिक निगम दुर्ग के अंतर्गत सतनामी आश्रम कल्याण समिति कसारीडीह सांस्कृतिक भवन के 57 लाख रुपए से अधिक की राशि से बनने वाले प्रथम तल के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया। इस अवसर पर डॉ. डहरिया ने कहा कि छत्तीसगढ़ में नागरिक सुविधाओं के विकास के लिए सभी जरूरी कार्य कराए जा रहे हैं। नगरीय निकायों में बिजली, पानी, सड़क, सामुदायिक भवन सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं के कार्य किए जा रहे हैं, साथ ही नगरों की स्वच्छता और सौंदर्यीकरण के लिए विभिन्न कार्य किए जा रहे है। उन्होंने कहा कि नागरिक सुविधाओं के विकास के लिए पैसों की कोई कमी नहीं आएगी।

अब न पांव फंसते हैं न पहियां

दूर हुई समस्या

एक साल पहले की बात है। गांव में रहने वाला राजकुमार हो या फिर शहर में रहने वाला मनीष या फिर कोई और..। गांव में सरकारी अस्पताल, उचित मूल्य की दुकान, धान उपार्जन केंद्र या किसी और सार्वजनिक स्थल, सरकारी भवन की ओर अपने काम से जाने वालों को अक्सर ही परेशानी का सामना करना पड़ता था। मुख्य सड़कों से लेकर सरकारी भवन या सार्वजनिक स्थानों तक गर्मी के दिनों में जहां धूल से परेशानी उठानी पड़ती थी, वहीं बारिश के दिनों में कच्ची सड़क पर बहने वाले बारिश के गंदे पानी, कीचड़ सहित गड्ढ़ों में पैदल चलने पर चप्पलों से लेकर पांव और साइकिलों से लेकर मोटर सायकिलों, गाड़ियों तक के पहिये फंस जाया करती थी। मुख्य मार्ग से सरकारी भवन या सार्वजनिक

सार्वजनिक स्थल हो या शासकीय भवन, मुख्यमंत्री सुगम सड़क से बेहतर हुआ आवागमन

स्थल तक बारहमासी पक्की सड़क नहीं होने का खामियाजा अक्सर लोगों को उठाना पड़ता था। गांव-गांव में प्रमुख सड़कों से सार्वजनिक स्थल तक की छोटी-छोटी दूरी की यह बड़ी समस्या अब दूर होने लगी है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के संज्ञान में आते ही उन्होंने मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना की शुरूआत की है। इस योजना से अब सार्वजनिक स्थल, सरकारी भवन, स्कूल सहित महत्वपूर्ण स्थान पर आने जाने वालों के न पांव फंसते हैं और न ही उनकी साइकिल, मोटरसाइकिलों के पहिये फंसते हैं।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और लोक निर्माण मंत्री ताम्रध्वज साहू की पहल से अब प्रदेश के अनेक सार्वजनिक उपयोग के भवन यथा शासकीय चिकित्सालय, स्कूल, कॉलेज, पंचायत सार्वजनिक भवन, उचित मूल्य की दुकान, आंगनबाड़ी भवन एवं अन्य शासकीय शैक्षणिक संस्थानों के भवन, सार्वजनिक स्थल यथा हाट-बाजार, श्मशान घाट, मेला स्थल, धान संग्रहण केन्द्र जैसे अनेक महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपयोग के केन्द्र मुख्य मार्ग से जुड़ने लगे हैं। पहले ऐसे स्थानों तक बारहमासी पक्की मार्ग नहीं होने के कारण आने-जाने वालों को आवागमन में बहुत ही ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता था। रायपुर जिले के मंदिरहसौद के ग्रामीण अंचलों में रहने वाले छात्र करण निर्मलकर, रत्नेश दुबे और अंजोर दास और शिक्षक श्री एस के वर्मा सहित विद्यालय के अन्य स्टाफ संगीता ढ़ीढ़ी, ए.के. साहू सभी खुश है कि उनके शासकीय उच्चतर विद्यालय में राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर स्कूल के कमरों तक मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना से पक्की सड़क बन गई है। इन्होंने बताया कि कांक्रीटयुक्त मार्ग बनने से अब उन्हें बारिश में कीचड़ से होकर नहीं चलना पड़ेगा। छात्रों का कहना है कि बारिश में कीचड़ से हो जाने से उनके कपड़े भी गंदे हो जाते थे। विद्यालय में लिपिक संगीता ढ़ीढ़ी ने बताया कि बारिश के दिनों में बहुत ही ज्यादा तकलीफों का सामना करना पड़ता था। छात्रों के पैर फंसते और कपड़े भी गंदे होते थे। अब बहुत राहत है। बोरियाखुर्द की खेमिन धनगर, मनीष ध्रुव ने बताया कि आंगनबाड़ी सहित आसपास के स्कूलों और बस्तियों में आने-जाने के लिए वर्षों से पक्की सड़क की कमी थी। लोक निर्माण विभाग के माध्यम से

मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना अंतर्गत पक्की सड़क बनी तो सभी का आवागमन आसान हो गया है। श्री मनीष ध्रुव ने बताया कि पहले बोरियाखुर्द के सारस्वतनगर से आंगनबाड़ी केंद्र के बीच की सड़क एकदम से जर्जर थी। बारिश में मोटर सायकल और अन्य चार पहिया वाहनों के पहिये भी फंस जाते थे। इस दौरान दुर्घटनाओं की आशंका भी बनी रहती थी। आंगनबाड़ी केंद्र की सहायिका खेमिन बाई ने बताया कि पक्की सड़क नहीं होने से आंगनबाड़ी पहुचने वाले छोटे बच्चों और स्कूली बच्चों को भी बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी। अब मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना से बनी पक्की सड़क से आने-जाने में बहुत सहूलियत होने लगी है। बोरियाखुर्द में मुक्ति स्थल श्मशान घट तक भी आने जाने का कोई पक्का मार्ग नहीं था। यहां भी बारहमासी सड़क बना दिए जाने से मुक्ति स्थल तक आसानी से लोग आना-जाना कर सकते हैं।

लोक निर्माण मंत्री ताम्रध्वज साहू का कहना है कि मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना का उद्देश्य समस्त महत्वपूर्ण सार्वजनिक शासकीय भवनों एवं सार्वजनिक स्थलों को बारहमासी पहुंच मार्ग से जोड़कर लोक कल्याण एवं जनसुविधा के लिए सुगम बनाया जाना है। मुख्यमंत्री श्री बघेल के नेतृत्व में प्रदेश के लोगों को राहत पहुचाई जा रही है। उन्होंने कहा कि बारहमासी सड़क नहीं होने का खामियाजा लोगों को उठाना पड़ता है। छत्तीसगढ़ सरकार उनकी समस्याओं को दूर करने की दिशा में काम कर रही है। मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

प्रदेश में मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना के अंतर्गत कुल 4079 मार्ग चिन्हित किये गये हैं। जिसकी कुल लम्बाई 689 कि.मी. और लागत राशि 486.69 करोड़ रुपये हैं। प्रदेश में इसके अंतर्गत 472 कार्य पूर्ण कर लिये गये हैं जबकि 1577 कार्य प्रगति पर और 2030 कार्य निविदा स्तर पर है।

गौठान में नि:शुल्क मिला खेत, बीज, पानी

पंखो से कुछ नहीं होता, हौसलो से उड़ान होती है - बहुत पहले किसी कवि की लिखी इस कविता को पोड़ी-उपरोड़ा विकासखण्ड के सूर्या स्वसहायता समूह की महिलाओं ने अपनी मेहनत और हौसले सही साबित कर दिया है। इसमें उनकी भरपूर मदद राज्य सरकार की नरवा-गरवा-घुरवा-बाड़ी योजना ने की है। पोड़ी-उपरोड़ा विकासखण्ड के कापूबहरा ग्राम पंचायत की इन महिलाओं ने सुराजी गांव योजना के तहत बने गौठान के चारागाह में सब्जी की खेती कर एक सीजन में ही 17 हजार रूपए से अधिक का मुनाफा अर्जित किया है। इस समूह की 10 महिलाएं गौठान के चारागाह में सब्जी उत्पादन में लगी हैं। गौठान के चारागाह में अभी भी एक एकड़ से अधिक रकबे में सब्जी लगी है और हर दिन महिलाएं सब्जी की तुड़ाई कर स्थानीय बाजार और गांव में बेच रही हैं।

सूर्या स्वसहायता समूह की अध्यक्ष मोहनी बाई पटेल ने बताया कि पहले घर-परिवार के काम में ही लगे रहते थे। घर बाड़ी में अपने उपयोग के लिए थोड़ी बहुत सब्जी-भाजी लगा लेते थे। उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों ने कापूबहरा गौठान में सब्जी की खेती के लिए समूह तैयार करने संपर्क किया। गांव की दस

महिलाओं को मिलाकर सूर्या स्वसहायता समूह बनाया गया और गौठान में चारागाह वाली जमीन पर सब्जी की खेती के लिए मदद की गई। श्रीमती मोहनी बताती हैं कि गौठान में सब्जी लगाने के लिए निःशुल्क खेत मिल गया, उद्यानिकी विभाग द्वारा सब्जी के बीज भी मुफ्त में दिए गए। गौठान के चारों ओर मवेशियों से सुरक्षा के लिए फेंसिंग भी कराई गई है। गौठान के नलकूप से सिंचाई की सुविधा मिली और विभागीय अधिकारियों ने सब्जी की खेती के उन्नत तरीके बताए। महिलाओं ने अच्छी मेहनत की और पहले सीजन में बरबट्टी, बैंगन, गंवार फली एवं मूली की खेती की। उचित देखभाल के बाद समूह ने लगभग छह क्विंटल सब्जी का उत्पादन किया। इस सब्जी को स्थानीय बाजार में बेचा गया। गोबर की खाद का उपयोग कर सब्जी उगाने से इसकी कीमत भी अच्छी मिली। कटघोरा के थोक व्यापारियों ने भी सब्जी खरीदने के लिए सम्पर्क किया और गौठान से ही सब्जी को खरीदकर समय पर भुगतान भी किया। समूह की महिलाएं बताती हैं कि सब्जी बेचकर ही एक सीजन में 18 हजार रूपए का मुनाफा कमाया है। अब कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए चारागाह की जमीन पर अमरूद, नींबू, काजू और दूसरे फलदार वृक्षों का भी दो एकड़ रकबे में रोपण किया गया है। मोहनी ने बताया कि समूह की महिलाओं ने आधे एकड़ में उन्नत किस्म के 500 नींबू के पेड़ लगाए हैं। इनसे उत्पादन शुरू होते ही एक सीजन में एक से डेढ़ लाख रूपए की अतिरिक्त आमदनी समूह को होगी। चारे की फसल के साथ ही फलदार वृक्ष भी बढ़ेंगे और अगले एक वर्ष में इनसे भी फल लगने पर अतिरिक्त मुनाफा होगा। अभी इन महिलाओं द्वारा एक एकड़ रकबे में सब्जी का उत्पादन किया जा रहा है। आगामी दिनों में गौठान में सिंचाई आदि की सुविधाओं और महिलाओं की मेहनत तथा लगन को देखते हुए बड़े पैमाने पर आलू और मिर्ची की खेती की तैयारी की जा रही है।

सैलानियों को मिली टेटिंग एवं बोटिंग की सुविधा

संसदीय सचिव ने मचान निर्माण के लिए 10 लाख रुपए की घोषणा की

कोडार जलाशय में इको पर्यटन केन्द्र

महासमुन्द जिला स्थित कोडार जलाशय में बोटिंग सुविधा के साथ टेंटिंग शुरू हो गई है। संसदीय सचिव विनोद चंद्राकर ने वन चेतना केन्द्र कुहरी, इको पर्यटन कोडार जलाशय में इसका लोकार्पण किया। इस अवसर पर संसदीय सचिव ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने का काम कर रही है। इससे पर्यटन कारोबार को बढ़ावा मिलेगा और सैलानी छत्तीसगढ़ की गौरवशाली विरासत, लोक संस्कृति से परिचित हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि कोरोना में सबसे अधिक प्रभावित होने वाले सेक्टर में पर्यटन क्षेत्र भी एक है। उन्होंने कहा कि अब स्थिति सामान्य हो गई है। पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे व्यापार, व्यवसाय और रोजगार को बढ़ावा मिलता है। संसदीय सचिव चंद्राकर ने इको पर्यटन केन्द्र में मचान निर्माण के लिए 10 लाख रुपए देने की घोषणा की।

कलेक्टर डोमन सिंह ने कहा ऐतिहासिक नगर सिरपुर में भी पर्यटन को बढ़ावा देने हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है। वहां भी सैलानियों के लिए रायकेरा तालाब में बोटिंग की सुविधा शुरू हो गई है। कुहरी से सिरपुर तक पांच चयनित जगहों पर सुन्दर कौशिल्या उपवन भी बनाए गए है। वनमण्डलाधिकारी पंकज राजपूत ने इको पर्यटन केन्द्र योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इको पर्यटन केन्द्र का विकास एवं निर्माण 39 लाख की लागत से कराया गया है। कोडार जलाशय में नौका विहार के लिए बोटिंग की सुविधा सैलानियों को उपलब्ध है। यहां रियायती दर पर विश्राम के लिए चार टेंटिंग की भी व्यवस्था है। क्रिकेट, बॉलीबाल, कैरम, शतरंज के साथ ही निशानेबाजी की सुविधा भी इस इको पर्यटन केन्द्र में उपलब्ध है।

छत्तीसगढ़ ने बनाया 1 और कीर्तिमान

समावेशी विकास में देश के 5 बड़े राज्यों में छत्तीसगढ़ भी

छत्तीसगढ़ ने देश के बड़े राज्यों के बीच एक नया कीर्तिमान बनाया है। एक सर्वे के अनुसार समावेशी विकास में देश के बड़े राज्यों में छत्तीसगढ़ ने पाँचवा स्थान हासिल किया है। इस रैंकिंग के अनुसार पहले स्थान पर आँध्रप्रदेश ने बाजी मारी है वहीं गुजरात, मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्य छत्तीसगढ़ से काफी निचले पायदान पर हैं। यह सर्वे प्रतिष्ठित पत्रिका के द्वारा देश के सभी राज्यों के बीच किया गया है। छतीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राज्य में आर्थिक अवसरों को पैदा करने के साथ- साथ समाज के सभी वर्गों के लिये विकास के समान अवसर सृजित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

ग्रामीण विकास पर आधारित योजनाओं से छत्तीसगढ़ के गांवों में तीन सालों में ही बड़ा बदलाव दिख रहा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में राज्य में नई सरकार गठन के साथ ही छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास के लिए एक रोड मैप तैयार किया गया। जिसके तहत सबसे पहले किसानों का ऋण माफ किया, किसानों को इनपुट सब्सिडी के रूप में 5 हजार करोड़ की राशि दी, समर्थन मूल्य पर वनोपज की खरीदी की गयी, मनरेगा के तहत रोजगार उपलब्ध कराए, जिससे किसानों, गरीब और मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। नरवा, गरवा, घुरवा, बारी कार्यक्रमो के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के प्रयास हुए। जिसमें परंपरागत संसाधनों का बेहतर इस्तमाल सुनिष्चित किया गया। इसका परिणाम किसानों तथा ग्रामीणो की व्यक्तिगत आय वृद्धि के रूप में देखा गया।

छत्तीसगढ़ सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गांवों में रोजगार के अवसर बढ़ा रही है। कोर सैक्टर के अलावा ग्रामोद्योग को बढ़ावा दे रही है। रोजगार के साथ ही स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे है। कोरोना से उत्पन्न आर्थिक संकट के काल में भी छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था गतिशील बनी रही। इस दौरान आटोमोबाइल सहित सभी सैक्टरो में तेजी रही, जीएसटी संग्रहण में बढ़ोतरी तथा सर्वाधिक वनोपज की खरीदी की गयी।

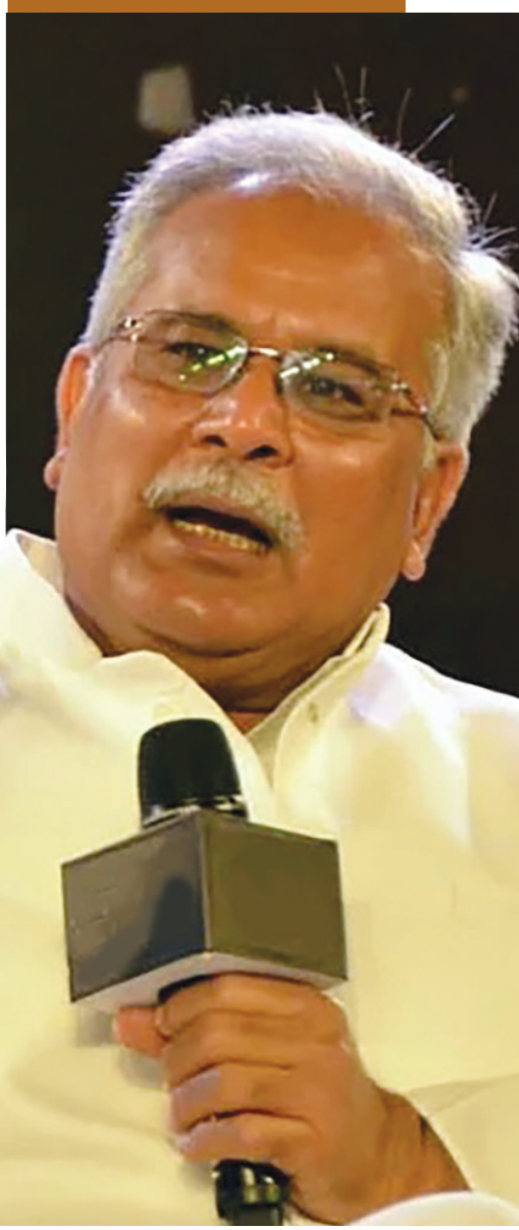

अमेरिका और सहयोगी राष्ट्रों ने तालिबान से कहा है कि वह पूर्व अफगान सुरक्षाबलों को निशाना ना बनाए.

22 देशों ने मिलकर तालिबान को दी चेतावनी

22 देशों ने एक साझा बयान में कहा है कि तालिबान की इस्लामी सरकार पूर्व सरकार के कर्मचारियों और सुरक्षाबलों को निशाना न बनाने के अपने वादे पर कायम रहे. बयान में कहा गया है, ह्लहम निरंकुश हत्याओं और लोगों के लापता होने की रिपोर्टों से बेहद चिंतित हैं. इससे पहले ह्यूमन राइट्स वॉच की एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि कि तालिबान शासन के दौरान अब तक सौ से अधिक पूर्व सुरक्षाकर्मियों की निरंकुश हत्याएं की जा चुकी है. तालिबान ने चार महीने पहले अफगानिस्तान पर नियंत्रण किया था. ह्यूमन राइट्स वॉच ने ऐसे 47 पूर्व सुरक्षाबलों का डेटा भी जुटाया है जिन्होंने 15 अगस्त से 31 अक्तूबर के बीच या तो तालिबान के समक्ष आत्मसमर्पण किया था या तालिबान ने उन्हें पकड़ा था. बाद में उनकी हत्या कर दी गई. तालिबान ने अफगानिस्तान में शासन संभालने के बाद भरोसा दिया था कि पूर्व सरकार के कर्मचारियों और सैनिकों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा. अमेरिका ने एक संक्षिप्त साझा बयान जारी किया है जिस पर ब्रिटेन समेत यूरोपीय संघ और 19 अन्य देशों ने हस्ताक्षर किए हैं.

इन देशों ने अफगानिस्तान में हो रही हत्याओं और लोगों के लापता होने के मामलों पर चिंता जाहिर की है और गंभीरता से इसकी जांच की मांग की है. बयान में कहा गया है, ह्लहम तालिबान को उसके उठाए गए कदमों के आधार पर ही आंकना जारी रखेंगे.ह्व इससे पहले आई मानवाधिकार रिपोर्टों में भी तालिबान पर निरंकुश हत्याएं करने के आरोप लगाए हैं. ऐसी कई घटनाओं हुई जिनमें तालिबान ने अपने वादे के खिलाफ कार्रवाइयां की हैं. इस साल अगस्त में एमनेस्टी इंटरनेशनल ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी. एमनेस्टी को पता चला था कि 30 अगस्त को तालिबान के करीब तीन सौ लड़ाके तीस अगस्त को दहानी कुल गांव के पास पहुंचे. यहां कई पूर्व सैनिकों के परिवार रह रहे थे. इस रिपोर्ट में कहा गया था कि तालिबान के समक्ष आत्मसमर्पण करने वाले नौ सैनिकों को गोलियों से मार दिया गया. दो अन्य सैनिकों की मौत गोलीबारी में हो गई और इस घटना के बाद हुई झड़प में दो आम नागरिक भी मारे गए. मारे जाने वालों में 17 साल की एक लड़की भी शामिल थी.

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा था कि टीबी के 65 फीसदी मामले 15 साल से 45 साल तक के लोगों में देखने को मिल रहे हैं। जो आर्थिक रूप से सबसे अधिक उत्पादक आबादी वाला वर्ग है।

युवाओं में बढ़ रहे हैं स्पाइन टीबी के मामले

जानें इसके लक्षण और बचाव के तरीके

भारत में कोरोना वायरस के बीच टीबी के मामले भी बढ़ते दिखे हैं। जिसका अनुमान लगाया जा रहा था कि ऐसा कोरोना वायरस संक्रमण की वजह से हो रहा है। हालांकि, स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह साफ किया कि टीबी के मामले कोविड-19 संक्रमण की वजह से बढ़ रहे हैं, इसके लिए पर्याप्त सबूत नहीं मिले हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा था कि टीबी के 65 फीसदी मामले 15 साल से 45 साल तक के लोगों में देखने को मिल रहे हैं। जो आर्थिक रूप से सबसे अधिक उत्पादक आबादी वाला वर्ग है। उन्होंने कहा कि टीबी के 58 प्रतिशत मामले ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। वहीं, युवा रीढ़ में टीबी के संक्रमण से ज्यादा पीड़ित हो रहे हैं। एम्स के अध्ययन में यह बात सामने आई, रीढ़ में टीबी से पीड़ित हर दूसरा मरीज युवा देखा जा रहा है। डॉक्टरों ने 1600 से ज्यादा मरीजों पर अध्ययन किया है। पीड़ितों में एक तिहाई मरीज 21 से 33 साल की उम्र के हैं। वहीं 17 फीसद मरीजों की उम्र 31 से 40 के बीच है। डॉक्टर्स का कहना है कि कमर और गर्दन के दर्द को नजरअंदाज करना बड़ी भूल हो सकती है। चार सप्ताह से अधिक समय तक अगर कमर में दर्द है, तो यह रीढ़ में टीबी की बीमारी का संकेत हो सकता है।

स्पाइनल टीबी

रीढ़ की हड्डी में होने वाला टीबी इंटर वर्टिबल डिस्क में शुरू होता है, जिसके बाद रीढ़ की हड्डी में फैलता है। समय पर इलाज न किया जाए, तो अपाहिज भी हो सकते हैं। स्पाइन में टीबी के शिकार अक्सर युवा ही होते हैं। इसके लक्षण भी साधारण हैं, जिसके कारण अक्सर लोग इसे नजरअंदाज करने की भूल करते हैं। इसके शुरूआती लक्षणों में कमर में दर्द रहना, बुखार, वजन कम होना, कमजोरी या फिर उल्टी आदि हैं।

टीबी से बचाव के तरीके

1. कमर में लंबे समय तक दर्द रहने पर डॉक्टर से समय पर जांच करवाएं, इसे टालें नहीं।
2. खांसी को दो हफ्ते से ज्यादा हो जाएं, तो फौरन डॉक्टर को दिखाएं। दवा का पूरा कोर्स लें।
3. मास्क पहनें या हर बार खांसने या छींकने से पहले मुंह को पेपर नैपकिन से ढकें।
4. बीमार होने पर इधर-उधर न थूकें बल्कि एक डिस्पोजेबल बैग का इस्तेमाल करें। जिससे इसे दूसरों में फैलने से रोका जा सके।
5. मरीज को ऐसे कमरे में रखें जहां वेंटीलेशन अच्छा हो। कोशिश करें कि एसी का इस्तेमाल न हो।
6. पोष्ण से भरपूर डाइट लेने के साथ रोजाना व्यायाम जरूर करें।
7. सिगरेट, बीड़ी, हुक्का, तंबाकू, शराब आदि से दूरी बनाएं।
8. भीड़-भाड़ या जिन जगहों पर गंदगी होती है वहां न जाएं।
9. बच्चे के जन्म पर इउऋवैक्सीन जरूर लगवाएं।
10. टीबी की जांच के लिए सीबीसी ब्लड काउंट, एलीवेटेड राइथ्रोसाइट सेडिमैटेशन, ट्यूबर्क्युलिन स्किन टेस्ट के जरिए टीबी के संक्रमण का पता लगाया जा सकता है। इसके अलावा रीढ़ की हड्डी का पहले एमआरआई, सीटी स्कैन और फिर बोन बॉयोप्सी जांच के जरिए भी टीबी के संक्रमण का पता लगाया जाता है।

रिलेशनशिप

आदतें...तोड़ सकती हैं

पार्टनर से आपका रिश्ता

कम्युनिकेशन किसी भी रिश्ते में ऑक्सीजन की तरह काम करता है, लेकिन अगर दो लोगों के बीच एक अच्छा बॉन्ड न हो तो रिश्ते का आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है। जब आप अपने लाइफ पार्टनर से अपनी जरूरतों, इच्छाओं, खुशी और दुख के बारे में बात करते हैं, तब ये आपका रिलेशनशिप और भी ज्यादा मजबूत होने लगता है। मगर कई बार हमारे कम्युनिकेशन का तरीका और दूसरी आदतें रिश्ते टूटने का कारण भी बन सकती है। जब पार्टनर्स के बीच बड़ा कम्युनिकेशन गैप होता है, तब एक-दूसरे को दिल की बात समझाना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

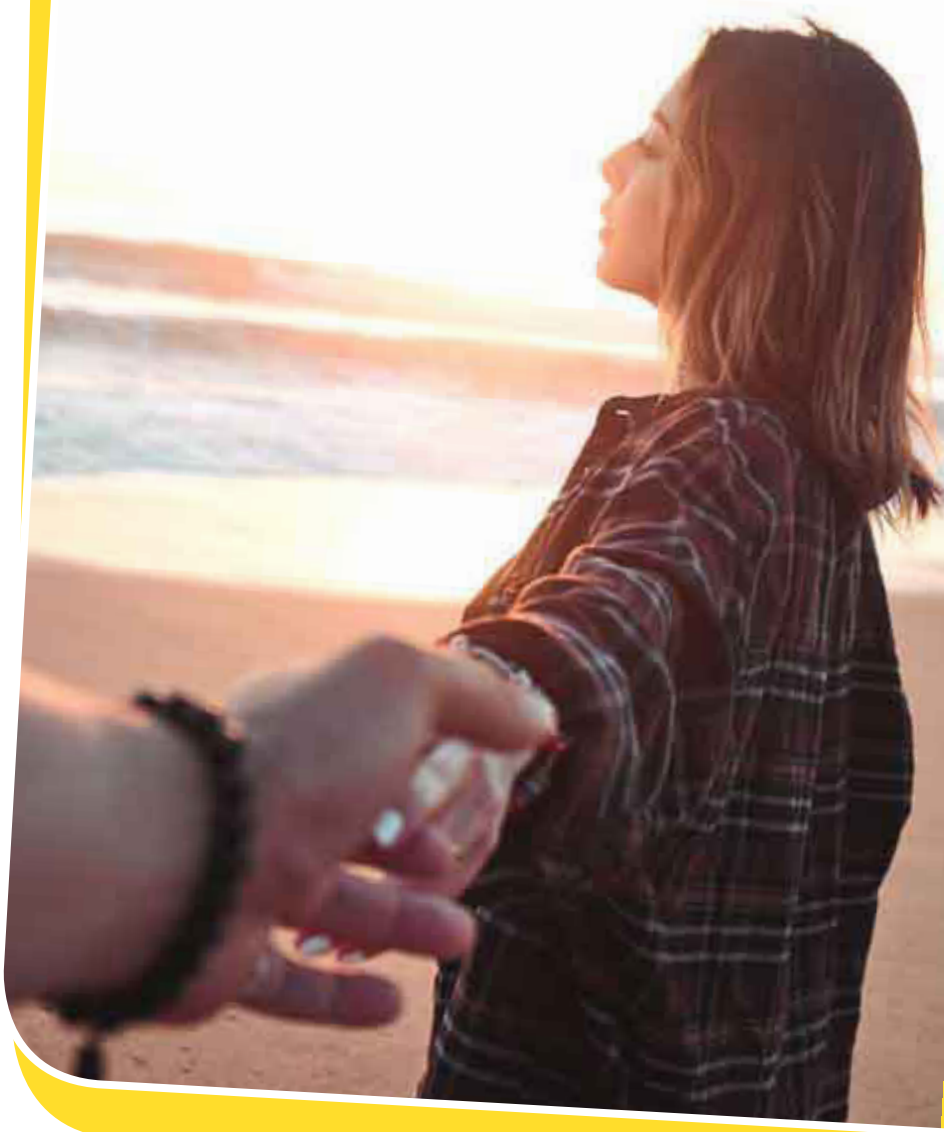

पार्टनर की बात-बात पर आलोचना करना आपके रिश्ते के बीच में दरार डाल सकता है।

ऐसे रिश्ते को संभालना भी मुश्किल रहता है। आपको यह समझना होगा कि पार्टनर से रिश्ता मजबूत बनाए रखने के लिए सिर्फ प्यार ही नहीं बल्कि कई छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना होता है, जो कई बार आप इग्नोर कर जाते हैं और रिश्ता कमजोर होता चला जाता है। कई ऐसी आदतें हो सकती हैं जो आपको रिश्ते के लिए खतरे से खाली नहीं होती, हालांकि आप उन्हें जाने अनजाने बढ़ाते चले जाते हैं, जो आपके रिश्ते की नींव पूरी तरह से कमजोर कर देता है। ऐसे में उन आदतों को वक्त रहते ही आपको छोड़ देना चाहिए। पार्टनर की बात-बात पर आलोचना करना आपके रिश्ते के बीच में दरार डाल सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका पार्टनर गलत है या सही। हर बात पर टोकना अच्छी बात नहीं है। अगर आपको उनकी कोई आदत बुरी लगती है तो उन्हें प्यार से समझाएं। उन्हें उसके नुकसान के बारे में बताएं। बात करते समय गलत शब्द का इस्तेमाल ना करने की कोशिश करें, क्योंकि आलोचना या फिर बार-बार के ताने आप के रिश्ते को खराब कर सकते हैं।

एक-दूसरे से करते हैं कम बातचीत

अगर आप अपने पार्टनर से किसी बात को लेकर दूर रहना चाहते हैं या उनसे बात नहीं करना चाहते हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि आप उन्हे पूरी तरह से अवॉइड करने लगे। उनके नंबर को ब्लॉक कर दें या उनसे कटने लगे। आपको उनसे थोड़ा बहुत कम्युनिकेशन बनाए रखना चाहिए। नाराज होने पर पार्टनर से न के बराबर बातचीत आपके रिश्ते में दूरी पैदा करने का काम करती है। लंबे समय तक ऐसा होने पर आप एक-दूसरे से कब दूर हो जाते हैं और आपको पता भी नहीं चलता। यह आप दोनों की जिम्मेदारी है कि बैठकर अच्छी तरह से अपनी बातें सामने रखें और उसे सुलझाकर खत्म करें।

हर बात पर बहस करते रहना

कुछ लोगों की आदत होती है कि उन्हें हर बात पर बहस करनी होती है। अगर आपके अंदर भी इस तरह की आदत है और अपने पार्टनर के साथ इस तरह से पेश आते हैं तो यह आपके रिश्ते के लिए खतरनाक हो सकता है। बहस के दौरान आप अपने पार्टनर की गलती निकालते हैं, उन्हें गलत शब्द कह जाते हैं और वह बदले में आपसे कुछ कहते हैं। जिसका असर आपके रिश्ते पर पड़ने लगता है और बात बिगड़ने पर लड़ाई-झगड़े बढ़ने में देर नहीं लगती। ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि कई बार आप अपने अहम में अपनी गलती मानने को तैयार नहीं होते, जबकि रिश्ते में कभी-कभार झुकने को गलत नहीं कहते हैं। मजाक करना ठीक बात है, लेकिन जानकर अपने पार्टनर का भरी महफिल में बार-बार मजाक उड़ाना बिल्कुल भी सही नहीं है। कई लोगों की आदत होती है कि वह हर छोटी बात को मजाक बनाकर कह देते हैं और ऐसा करने से बाज नहीं आते। अगर आप अपनी इस आदत को हल्के में ले रहे हैं, तो ऐसा करना छोड़ दें। आपका ऐसा करना हर किसी को नहीं भा सकता, खासकर जब आप हमेशा ही दूसरों का मजाक उड़ाने में विश्वास रखते हैं। अपने पार्टनर पर जोक करना या उन्हें चिढ़ाना आपके रिश्ते को बेशक खराब सकता है।

ओमिक्रॉन:

कोरोना वेरिएंट को लेकर भारत सरकार की सलाह

कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन को लेकर उठ रहे सवालों के बीच भारत सरकार ने लोगों के लिए सलाह जारी की है. स्वास्थ्य मंत्रालय ने उन प्रश्नों के जवाब भी दिए हैं जो आमतौर पर ओमिक्रॉन को लेकर पूछे जा रहे हैं.

स्वास्थ्य मंत्रालय ने ये भी कहा है कि भारत में टीकाकरण के आंकड़ों और डेल्टा वेरिएंट के दौरान लोगों में पैदा हुई इम्यूनिटी को देखते हुए ये माना जा रहा है कि ओमिक्रॉन के गंभीर होने की आशंका कम है.

ओमिक्रॉन की वजह से लोगों के मन में सवाल उठ रहा है कि क्या तीसरी लहर आने वाली है. इसे लेकर भारत सरकार ने कहा है कि ओमिक्रॉन भारत समेत अन्य देशों मे फैल सकता है. मंत्रालय ने कहा है कि अभी ये स्पष्ट नहीं है कि ये वेरिएंट किस पैमाने पर फैलेगा और इसकी गंभीरता क्या होगी. उसने कहा कि ऐसा माना जा रहा है कि इस बीमारी की गंभीरता कम रहेगी. मंत्रालय ने कहा है कि हालांकि

अभी वैज्ञानिक सबूत जुटाए जा रहे हैं और नए सबूत सामने आ रहे हैं. भारत सरकार ने ओमिक्रॉन को देखते हुए लोगों से वैक्सीन लगवाने की अपील की है. शुक्रवार को जारी बयान में केंद्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि ओमिक्रॉन भारत सहित दुनिया के देशों में फैल सकता है.सरकार ने कहा कि डेल्टा वेरिएंट के बाद लोगों में पैदा हुई इम्यूनिटी (शरीर की रक्षात्मक प्रणाली) और टीकाकरण को देखते हुए ये अंदाजा लगाया जा रहा है कि ओमिक्रॉन बीमारी बहुत गंभीर नहीं होगी.

क्या मौजूदा वैक्सीन असरदार है?

सरकार ने बयान में ये भी कहा है कि अभी ऐसा कोई सबूत नहीं है जिससे पता चल सके कि मौजूदा वैक्सीन ओमिक्रॉन पर काम नहीं कर रही हैं. सरकार ने अपने बयान में अधिक से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाने पर जोर दिया है. भारत में अभी जो मौजूदा टेस्ट हो रहे हैं वो कोविड संक्रमण का तो पता लगा सकते हैं लेकिन ये ओमिक्रॉन वेरिएंट है या नहीं इसका पता नहीं लगा सकते हैं. ओमिक्रॉन की पुष्टि के लिए जीनोम सिक्वेंस टेस्ट की जरूरत होती है. भारत के बेंगलुरु में कोविड के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के मामले मिलने के बाद देश भर में राज्य सरकारें अलर्ट पर हैं. भारत में अबतक ओमिक्रॉम के चार मामले मिल चुके हैं. शनिवार 4 दिसंबर को एक मामला गुजरात और एक महाराष्ट्र में सामने आया. इसी बीच तमिलनाडु में दो अंतरराष्ट्रीय यात्रियों में कोविड संक्रमण की पुष्टि हुई है. ये सिंगापुर और ब्रिटेन से आए थे. इन दोनों लोगों के संपर्क में आए लोगों पर नजर रखी जा रही है.

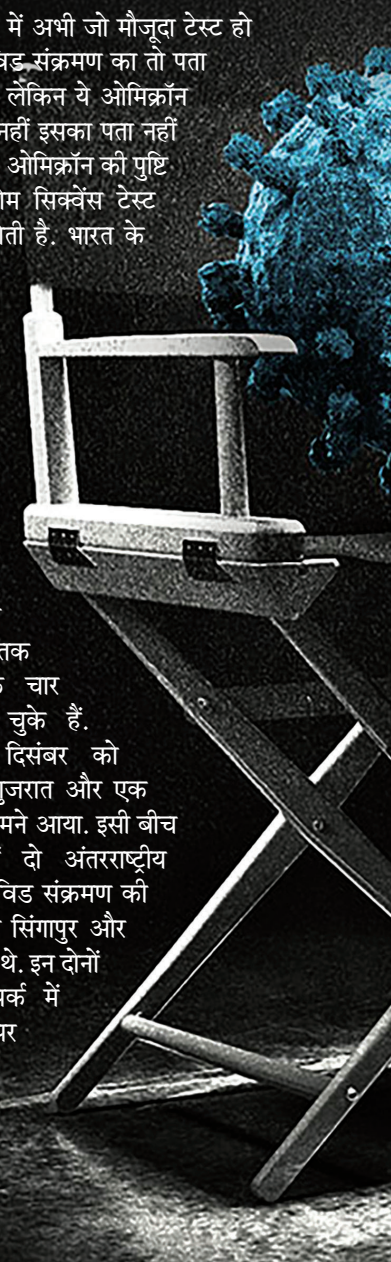

बूस्टर डोज की सलाह

समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक भारत के शीर्ष जीनोम वैज्ञानिकों ने चालीस साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए कोविड वैक्सीन के बूस्टर डोज की सलाह दी है. भारत सरकार ने सार्स-सीओवी-2 जीनोम सीक्वेंसिग लैब का एक नेटवर्क स्थापित किया है कि ताकि कोविड को अलग-अलग वैरिएंट्स पर नजर रखी जा सके. इस नेटवर्क के कंसोर्टियम ने सरकार से कहा है कि खतरे और आबादी के आधार पर 40 से ऊपर के लोगों को बूस्टर डोज दिया जाना चाहिए. कोविड के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के सामने आने के बाद से दुनियाभर में भी सरकारें अलर्ट पर हैं. अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने अमेरिका पहुंच रहे यात्रियों के लिए नए नियमों की घोषणा की है. अब अमेरिका आने वाले सभी यात्रियों को यात्रा शुरू करने से चौबीस घंटे पहले टेस्ट करवाना अनिवार्य होगा. ये नियम सभी देशों के नागरिकों पर लागू होगा. जिन लोगों ने वैक्सीन लगवा रखी है उन्हें भी टेस्ट कराना होगा. राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा, ह्लटेस्ट की इस सख्त टाइमलाइन से अतिरिक्त सुरक्षा मिलेगी. वैज्ञानिक इस नए ओमिक्रॉन वेरिएंट पर अध्ययन कर रहे हैं.ह्व इसी बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र के लिए चेतावनी जारी करते हुए कहा कि देशों को अपने हेल्थकेयर सिस्टम को मजबूत करना होगा और जल्द से जल्द लोगों को वैक्सीन लगवानी होगी ताकि कोविड-19 के बढ़ते हुए मामलों से निबटा जा सके.

इसी बीच ऑस्ट्रेलिया में भी ओमिक्रॉन वेरिएंट के मामले सामने आ रहे हैं. ऑस्ट्रेलिया दक्षिण अफ्रीकी देशों पर पहले ही यात्रा प्रतिबंध लगा चुका है. यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश जर्मनी ने कहा है कि जिन लोगों ने वैक्सीन नहीं लगवाई है वो आवश्यक सेवाओं के अलावा कोई और काम नहीं कर सकेंगे. जर्मनी टीकाकरण को अनिवार्य करने के लिए नया कानून भी लाने जा रहा है. सरकारें यात्रा प्रतिबंध लगा रही हैं लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि सीमाएं बंद करने से सिर्फ. समय ही मिल पाएगा. वेस्टर्न पैसिफिक क्षेत्र के लिए डब्ल्यूएचओ की रीजनल डायरेक्टर ताकेशी कासाई ने कहा, ह्लसिर्फ. सीमाएं बंद करने पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए. सबसे जरूरी ये है कि इस अत्यधिक संक्रामक वेरिएंट से निबटने की तैयारी की जाए. अभी जो जानकारी हमारे पास है उससे पता चलता है कि हमें अपना तरीका बदलने की जरूरत नहीं है.ह्व ओमिक्रॉन के मामले सामने आने के बाद से दुनियाभर के देश यात्रा प्रतिबंध लगा रहे हैं. गुरुवार को हांग कांग, नीदरलैंड्स, नॉर्वे और रूस ने यात्रा नियम सख़्त कर दिए. वहीं शुक्रवार को मलेशिया ने कहा कि वह यात्रा नियमों को और सख़्त करने जा रहा है.

शीत लहर के प्रकोप से कैसे निबटें

भारत जैसे गर्म देश के लिए शीत ऋतु की शीतलता बड़ी ही कष्टप्रद होती है। इस समय शीत का मिजाज कुछ अलग ही तेवर लिये रहता है। हवाएं इतनी सर्द होती हैं कि तन मन को कंपा देती है। ऊपर से बने कोहरे का प्रकोप। यानी सब तरफ एक बर्फीला सा माहौल। बहुत मुश्किल हो जाता है ऐसे में जीना। ठंड से बचने के लिए हम अपने शरीर पर कपड़ों की पर्त दर पर्त चढ़ा लेते हैं। पैरों को मोजे जूते में कैद कर देते हैं और सिर को ऊनी हेल्मेट से सुरक्षित कर लेते हैं। फिर भी सुरक्षा कवच पहनने से रह जाती है हमारी नाक और काम करने के लिए खुली उंगलियां।

मौसम के बिगड़े मिजाज को सहना हमारी मजबूरी

मौसम के बिगड़े मिजाज को सहना हमारी मजबूरी है क्योंकि हमारे देश की भौगोलिक परिस्थिति ही कुछ ऐसी है कि यहां मौसम असामान्य रूप से परिवर्तित होते रहते हैं। कभी कड़ाके की ठंड तो कभी झुलसा देने वाली भीषण गर्मी और कभी मूसलाधार वर्षा। इन विभिन्न मौसमों में हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा तो करनी ही पड़ती है।

शीत लहर में अपने आप को कैसे बचाएं

अत्यधिक ठंड पड़ने पर जहां गांव के लोग अलाव का सहारा लेते हैं वहीं शहर के लोग रूम हीटर जैसे उपकरणों का उपयोग करते हैं। साथ ही चलती है गर्म-गर्म काफी या चाय। कुछ लोग शरीर को गर्मी पहुंचाने के उद्देश्य से इन दिनों शराब का भी सहारा लेते हैं। इन सभी चीजों से वे ठंड से अपनी रक्षा करते हैं। यह स्थिति तब बनती है जब वातावरण का तापमान 14-15 डिग्री सेल्सियस पर आ जाता है। लेकिन जब तापमान 10 से 8 डिग्री सेल्सियस या उससे भी कम हो जाता है तब मैदानी इलाके के निवासियों के लिए यह बड़ा मुश्किल समय होता है। इस तापमान पर पूरे वातावरण में शीत का प्रकोप बढ़ जाता है जो गर्म प्रदेश के निवासियों के लिए कष्टप्रद हो जाता है। वैसे तो ऐसे समय में पहाड़ी प्रदेशों का तापमान घटकर 2 से. डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। यह स्थिति उनके लिये भी असहनीय हो जाती है फिर भी अपनी समझ व शारीरिक क्षमता से वे इसे भी झेलते और जीते हैं। जो ऐसा नहीं कर पाते उनकी प्रायः ठंड से मृत्यु हो जाती है।

शीत लहर में शारीरिक तापमान में आने लगती है गिरावट

वाह्य वातावरण हमारे शरीर की आंतरिक ऊष्मा को बराबर प्रभावित करती है। इस संदर्भ में शीत लहर के दिनों में जब तापमान न्यून हो जाता है तब हमारा शरीर भी उसे प्रभाव सेअपनी ऊष्मा खोने लगता है और व्यक्ति के शारीरिक तापमान में गिरावट आने लगती है तो इस गिरावट को वैज्ञानिक भाषा में अल्पतता या हाइपोथर्मिया कहते हैं। अल्पतता की अवस्था

तापमान का मामूली उतार-चढ़ाव घातक नहीं

चूंकि, मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है अतः उसमें सोचने, समझने एवं निर्णय लेने की शक्ति है साथ ही मौसम के बिगड़े मिजाज को झेलने की शारीरिक शक्ति भी। यही कारण है कि वह काफी हद तक तापमान के उतार चढ़ाव को आसानी से झेल लेता है और विषम वातावरण का सामना करने का कोई न कोई उपाय ढूंढ ही लेता है। वह अत्यधिक ठंडे प्रदेशों और अत्यधिक गर्म प्रदेशों में भी आसानी से जी लेता है। लेकिन जहां तक तापमान के साथ मनुष्य के सामंजस्य का प्रश्न है वहां वैज्ञानिक यह मानते हैं कि हमारे शरीर का आंतरिक तापमान 37 डिग्री से. के आसपास अवश्य रहना चाहिये। इसमें वृद्धि अथवा गिरावट मनुष्य के लिए हानिकारक है और जहां तक बाहरी वातावरण के सामान्य तापमान का प्रश्न है, वैज्ञानिक 21 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस तक उचित मानते हैं। ऐसे में मनुष्य को ठंडक या गर्मी नहीं महसूस होती । तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा होने पर मनुष्य गर्मी महसूस करने लगता है और 21 डिग्री सेल्सियस से कम होने पर ठंड महसूस करने लगता है । लेकिन तापमान का मामूली उतार-चढ़ाव घातक नहीं होता है। इंसान इसे आसानी से बदन के कपड़े कम करके अथवा बढ़ा कर सह लेता है और अपने शरीर का आंतरिक तापमान नियंत्रित कर लेता है। किंतु जब तापमान में असामान्य परिवर्तन आ जाता है तब मात्र कपड़ों से ही बात नहीं बनती। अत्यधिक ठंडे वातावरण में हमारे शरीर की आंतरिक ऊष्मा कम होने लगती है तब हम गर्मी पाने के लिये अन्य उपाय भी करने लगते हैं।

में पहुंचने वाले मनुष्य के शरीर का तापमान जब 33 डिग्री सेल्सियस पर आ जाता है, तब वह अपनी चेतना खोने लगता है और शीतलहर की चपेट में आ जाता है। यदि वह इससे अपने को बचा नहीं पाता और उसका शारीरिक तापमान घटकर 31 डिग्री से. पर आ जाता है तो उसका मस्तिष्क भी शिथिल पड़ जाता है। जिसके फलस्वरूप शरीर तेजी से ठंडा होने लगता है और 27 डिग्री से. तापमान तक आते आते उसका हृदय भी काम करना बंद कर देता है जिसका परिणाम मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं होता। यह तो था शीतलहर का वैज्ञानिक ग्राफ या यूं कहिये कि वैज्ञानिक विवेचना। लेकिन हम कैसे समझें कि सामने वाला व्यक्ति शीतलहर की चपेट में आ चुका है और उसे कैसे बचायें तथा शीतलहर के दिनों में हम अपने आप को कैसे सुरक्षित रखें।

कुछ बातें ध्यान देने योग्य, जिसे जानना आवश्यक

यह जानना या समझना शायद उतना कठिन नहीं है क्योंकि अपने अनुभवों से हम प्रायः शीतलहर से बचना सीख ही जाते हैं। फिर भी कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं, जिसे हमें जान लेना चाहिये। यह आवश्यक भी है। शीतलहर के दिनों में अत्यधिक ठंड महसूस होने पर हमारा पूरा शरीर कांपने लगता है। कंपन के समय हम अपने शरीर को थोड़ा सिकोड़ भी लेते हैं। जैसे हाथ से हाथ को जकड़कर पेट से चिपका लेते हैं और पैरों को सिकोड़कर घुटनों को भी पेट से चिपका लेते हैं। ऐसा करके हम शरीर की ऊष्मा को बचाने का प्रयास करते हैं। इससे ठंड से बचने में थोड़ी सफलता भी मिलती है लेकिन किसी कारणवश जैसे अपर्याप्त वस्त्र की वजह से अथवा उचित आश्रय स्थान के अभाव से या तीव्र वायु वेग या गीले होने की वजह से हम अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं तब कुछ समय पश्चात यह कंपकंपी भी खत्म हो जाती है और व्यक्ति अल्पतप्तता की स्थिति में पहुंच जाता है। यानी शीत लहर की चपेट में आ जाता है। तब उसकी शारीरिक पेशियां कठोर हो जाती हैं और शरीर की बाहरी त्वचा पीली या सफेद सी हो जाती है। यही शीत लहर की चपेट में आये हुए व्यक्ति की पहचान है। यदि ऐसे समय में उसे गर्मी प्रदान की जाय तो संभवतः वह बच भी सकता है । यदि ऐस नहीं हो पाता तो उसकी मृत्यु निश्चित है।

मेंटल हेल्थ को बुरी तरह प्रभावित करता है डूमस्क्रॉलिंग

डूमस्क्रॉलिंग एक ऐसी आदत है, जिसमें लोग नकारात्मक समाचार और सोशल मीडिया पोस्ट पढ़ने के हानिकारक चक्र में फंस जाते हैं। एक्सपर्ट्स कहते हैं कि डूमस्क्रॉलिंग का मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे चिंता, तनाव, अवसाद और घबराहट बढ़ जाती है। कुछ ऐसे टिप्स हैं, जिन्हें फॉलो करके आप इस आदत पर अंकुश लगा सकते हैं और इससे होने वाले नुकसान से बच सकते हैं।

क्या है डूमस्क्रॉलिंग

डूमस्क्रॉलिंग को आसान शब्दों में कहें तो यह नकारात्मक समाचारों को स्क्रॉल करते समय स्क्रीन के अत्यधिक उपयोग को डूम सर्फिंग/स्क्रॉलिंग कहा जाता है। जब लोग इसके शिकार हो जाते हैं तो उनमें नई खबरों को जानने की बेचैनी होने लगती है। इस बेचैनी के कारण वो लोग मोबाइल तथा अन्य गैजेटों को लपकने लगते हैं। फिर चाहे वो खबर परेशान करने वाली ही क्यों न हो, लोग उसे छोड़ते नहीं हैं।

डूमस्क्रॉलिंग से होने वाले नुकसान

- यह मानसिक बीमारी को बढ़ा देता है।
- डूमस्क्रॉलिंग से घबराहट और चिंता बढ़ती है।
- डूमस्क्रॉलिंग आपकी नींद में बाधा डालता है।
- सोशल मीडिया और डूमस्क्रॉलिंग तनाव हार्मोन को ट्रिगर करते हैं।
- आप हर वक्त नकारात्मक एहसासों से गिरे रह सकते हैं।
- यह नकारात्मक विचारों और भावनाओं को पुष्ट करता है।

हानिकारक डूमस्क्रॉलिंग को कैसे रोकें

डूमस्क्रॉलिंग से बचने के लिए हमें इसे लेकर जागरुक होना होगा. इसके अलावा आपको कुछ टिप्स फॉलो करने होंगे। नीचे जानिए उनके बारे में...

1. समय और सीमा तय करें

डूमस्क्रॉलिंग जैसी भयंकर आदत से बचने के लिए आपको सोशल मीडिया और स्क्रीन स्क्रॉल करते वक्त किसी भी समाचार साइट के उपयोग के लिए समय सीमा तय करनी होगी। आप खबरों के बारे में सूचित रह सकते हैं और दोस्तों से जुड़े रह सकते हैं, लेकिन इसे सीमाओं के साथ करें। इन साइटों का उपयोग करने के लिए आपको एक दिन का समय तय करना चाहिए।

2. स्क्रॉलिंग पर माइंडफुलनेस लागू करें

समाचारों और पोस्टों को स्क्रॉल करने का एक उपयोगी उद्देश्य होता है, लेकिन यह नियंत्रण से बाहर हो सकता है। माइंडफुलनेस एक सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य अभ्यास है, जो ध्यान पर सबसे अधिक लागू होता है। इसलिए ध्यान रहे कि किसी भी पोस्ट पर ज्यादा वक्त न बिताएं।

3. सकारात्मकता पर ध्यान दें

सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए आपको पॉजिटिव खबरें देखनी चाहिए। अगर आपको किसी व्यक्ति की पोस्ट परेशान करती है तो उसे ब्लॉक कर दें। तनाव से बचने के लिए आप कॉमेडी पेज को लाइक कर सकते हैं। पॉजिटव चीजों में ज्यादा वक्त बिताने से आपको डूमस्क्रॉलिंग के लिए कम समय मिलता है।

4. थोड़ी देर के लिए प्रौद्योगिकी से दूर रहें

मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि कंप्यूटर, टैबलेट और फोन से पूरी तरह से अनप्लग करना मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी है। इसलिए जितना हो सके इन चीजों से दूर रहें और अपबे आप के लिए वक्त निकालें।

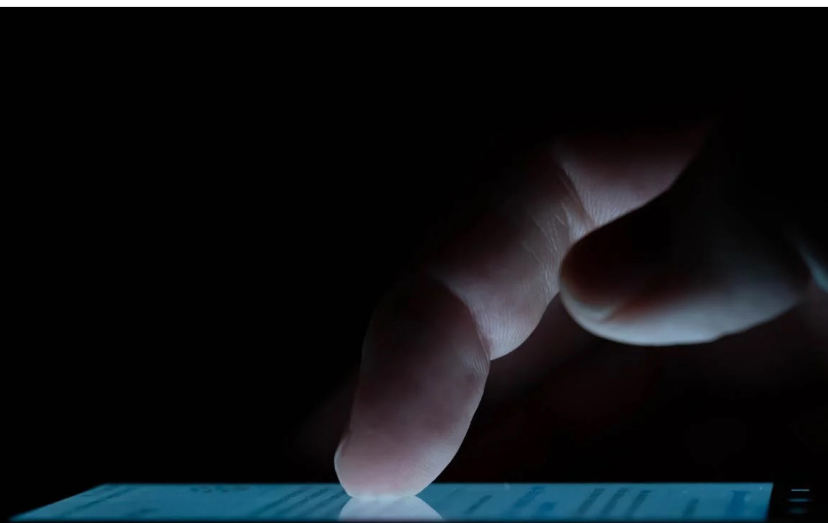

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, दुनियाभर में मलेरिया के कारण हर दो मिनट में एक बच्चे की जान जाती है, यह सफलता ऐतिहासिक है।

100 साल बाद WHO ने पहली मलेरिया वैक्सीन को दी मंजूरी

100 साल से ज्यादा समय का इंतजार उस वक्त खत्म हो गया है, जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मलेरिया की पहली वैक्सीन के व्यापक इस्तेमाल को मंजूरी दे दी। 1880 में अल्फोंस लावेरान ने पहली बार मलेरिया पैरासाइट की खोज की थी और तभी से इसकी वैक्सीन की खोज शुरू हो चुकी थी। डब्ल्यूएचओ ने आरटीएस, एस / एएस 01 (आरटीएस, एस) मलेरिया वैक्सीन के इस्तेमाल की सिफारिश की है, जिसका निर्माण ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन (जीएसके) ने किया है. इस मलेरिया वैक्सीन का नाम मॉस्क्विरिक्स रखा गया है। आपको बता दें कि दुनियाभर में हर साल मलेरिया संक्रमण के कारण करीब 4 लाख लोगों की जान जाती है और इसके कारण विश्व में हर दो मिनट में एक बच्चे की जान जा रही है।

मलेरिया के खिलाफ कितनी प्रभावशाली है ये वैक्सीन

बच्चों में मलेरिया के खिलाफ इस वैक्सीन की प्रभावशीलता करीब 30 प्रतिशत है, जो कि पी. फाल्सीपेरुम के खिलाफ देखी गई है। यह पैरासाइट मलेरिया के पांच परजीवी प्रजातियों में से एक और सबसे घातक है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, इस वैक्सीन की प्रभावशीलता बेशक कम है, लेकिन इसके जरिए हम मलेरिया रोकथाम मिशन में काफी सफल होंगे। साथ ही आने वाली वैक्सीन के लिए यह एक संभावना के रूप में देखा जाना चाहिए। आपको बता दें कि, यह ना सिर्फ मलेरिया के खिलाफ पहली वैक्सीन है, बल्कि ऐसा पहली बार हुआ है कि मानव परजीवी के खिलाफ किसी टीके को मंजूरी मिली हो। बैक्टीरिया या वायरस के मुकाबले परजीवियों की संरचना ज्यादा जटिल होती है।

डब्ल्यूएचओ ने घाना, केन्या और मलावी के स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ मिलकर 2019 में इस पायलट प्रोजेक्ट की शुरूआत की थी। जिसके परिणामों का अध्ययन करने के बाद पहली मलेरिया वैक्सीन के बच्चों में व्यापक इस्तेमाल को मंजूरी दी गई है। इस पायलट प्रोजेक्ट में इन क्षेत्रों से 8 लाख से ज्यादा बच्चों को अभी तक टीका लगाया जा चुका है। बता दें कि मलेरिया के लक्षणों में सिरदर्द, बुखार, मांसपेशियों में दर्द, पसीना आना और ठंड

इस महाद्वीप को मिलेगा सबसे बड़ा फायदा

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, हर साल आने वाले मलेरिया के मामलों में से सबसे ज्यादा केस सब-सहारन अफ्रीका (उप-सहारा अफ्रीका) में देखने को मिलते हैं। जो कि अफ्रीका महाद्वीप का हिस्सा है. डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, इस क्षेत्र में मलेरिया के कारण हर साल 5 साल से कम उम्र के मरने वाले बच्चों की संख्या 2,60,000 से ज्यादा है. जिसका मतलब है कि, इस मलेरिया वैक्सीन के इस्तेमाल से कई हजार बच्चों की जान बचाई जा सकेगी. विश्व स्वास्थ्य संगठन के डायरेक्टर-जनरल ने कहा कि, यह एक ऐतिहासिक पल है, जो कि विज्ञान, बच्चों के स्वास्थ्य और मलेरिया रोकथाम की दिशा में एक बहुत बड़ी सफलता साबित होगा।

मॉस्क्विरिक्स की लेनी पड़ेगी इतनी डोज

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, आरटीएस, एस/एएस01 मलेरिया वैक्सीन के द्वारा मध्यम से उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में खासतौर से बच्चों में मलेरिया के कारण होने वाली मौतों को रोकने में सफलता प्राप्त होगी। इसलिए इस मलेरिया वैक्सीन के बच्चों को 4 डोज दिए जाएंगे, जिनकी उम्र 5 महीने से ज्यादा होगी। पहली तीन डोज 5 महीने से 17 महीने की उम्र के बीच दी जाएगी और चौथी डोज इसके लगभग 18 महीने बाद दी जा सकेगी। इससे इस उम्र वर्ग के बच्चों पर मलेरिया बीमारी का बोझ कम किया जा सकेगा और उन्हें स्वस्थ वयस्क के रूप में विकसित होने में मदद मिलेगी।

माह : दिसंबर 2021

राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना काफी उतार-चढ़ाव भरा रहने वाला है। माह की शुरूआत में धार्मिक एवं मांगलिक कार्यक्रम आदि में सहभागिता होगी। सगे-संबंधियों और इष्ट-मित्रों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार बनेगा। कार्यक्षेत्र में भी सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग मिलेगा। हालांकि इस दौरान गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा।

वृष

वृष राशि के जातकों को साल के अंतिम मास में अपनी महत्वाकांक्षाओं पर पर नियंत्रण बना कर रखना होगा। पास के फायदे में दूर का नुकसान करने से बचना होगा। माह के पूर्वार्ध में किसी तीर्थ या पर्यटन स्थल की यात्रा पर जाने के योग बनेंगे। रोजी-रोजगार की दिशा में प्रयास कर रहे लोगों को संघर्ष के बाद ही सफलता के संकेत मिल रहे हैं। इस दौरान व्यवसायियों को बाजार में फंसा धन निकालने में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना तमाम तरह के बदलाव और नये अवसर लेकर आया है। माह की शुरूआत में ही आपको रोजी-रोजगार की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बनेंगे। प्रमोशन या ट्रांस्फर की भी संभावना है। मास के पूर्वार्द्ध में कामकाज को लेकर अत्यधिक व्यस्तता बनी रहेगी, किंतु उत्तरार्द्ध में आप स्वजनों के साथ सुखद सयम व्यतीत कर पाएंगे।

कर्क

कर्क राशि के जातकों पर इस मास घरेलू समस्याएं हावी रहेंगी। पारिवारिक मसलों को सुलझाने के लिए स्वजनों का साथ न मिल पाने पर मन थोड़ा खिन्न रहेगा। वहीं कार्यक्षेत्र में भी विरोधी सक्रिय रहेंगे। विभाग अथवा स्थान परिवर्तन भी संभव है। मास के दूसरे हफ्ते तक चाहे-अनचाहे लंबी दूरी की यात्रा संभव है। यात्रा के दौरान सेहत और सामान दोनों का पूरा ख्याल रखें।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना ढेर सारी खुशियां, लाभ और प्रगति का माध्यम बनने जा रहा है। माह की शुरूआत में ही पेशेवर और व्यावसायिक जीवन में चीजें आपके पक्ष में आती हुई दिखाएंगी। बाजार में फंसा हुआ धन अप्रत्याशित रूप से निकल आने पर आप राहत की सांस लेंगे। यदि किसी इष्ट मित्र के साथ कोई गलतफहमी हुई थी तो वह दूर हो जाएगी।

कन्या

कन्या राशि के जातकों को साल के आखिरी मास में अपनी भावनाओं पर पूरी तरह नियंत्रण रखना होगा। भावनाओं में बहकर या संकोचवश किसी से कोई ऐसा वादा करने से बचें, जिसे भविष्य में पूरा करने पर आपको परेशानी का सामना करना पड़े। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों के साथ तालमेल बनाने की बहुत जरूरत रहेगी। हालांकि साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखें कि आवश्यकता से अधिक किसी पर निर्भर रहना आपके लिए घातक साबित हो सकता है।

तुला

तुला राशि के जातकों को दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में अपनी वाणी और व्यवहार पर पूरी तरह से नियंत्रण रखना होगा। इस दौरान आप स्वयं के भीतर अत्यधिक आक्रामकता महसूस कर सकते हैं। इस दौरान आप किसी के साथ ऐसा व्यवहार न करें जो आपको स्वयं के लिए पसंद नहीं है। विशेष तौर पर किसी के साथ हंसी-मजाक करते समय इस बात का पूरा ख्याल रखें कि आपका हास कहीं दूसरे के उपहास का कारण न बन जाए।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के लिए साल का आखिरी महीना मिला-जुला साबित होगा। माह की शुरूआत में कामकाज के सिलसिले में अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान घर और बाहर दोनों जगह किसी बड़े फैसले को लेते समय आप खुद को असमंजस की स्थिति में पाएंगे। ऐसी स्थिति में कोई बड़ा निर्णय लेने की बजाय उसे कुछ दिनों के लिए टाल देना बेहतर रहेगा।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना तरक्की और सम्मान पाने के लिए नए अवसर लेकर आया है। माह की शुरूआत में आपको कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं, जिससे भागने की बजाय आपको उसके बेहतर तरीके से करके पूरी करके दिखाना चाहिए। इसके माध्यम से आप लोगों को अपनी क्षमता का लोहा मनवा सकते हैं।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह माह मिलाजुला साबित होगा। माह के प्रारंभ में किसी बात को लेकर छोटे भाई-बहनों के साथ गलतफहमियां पनप सकती हैं। विवाद चाहे घर का हो या फिर बाहर का उसे सुलझाते समय आपको विवाद की बजाय संवाद का सहारा लेना होगा। करिअर या कारोबार में मनचाही सफलता न मिल पाने के चलते मन थोड़ा खिन्न रहेगा।

कुम्भ

कुंभ राशि के जातकों के लिए साल का अंतिम महीना सुकून देने वाला साबित होगा। माह की शुरूआत में ही आपको करिअर और कारोबार की दिशा में किये गये प्रयासों में सफलता मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। इस दौरान कार्यस्थल पर सीनियर और जूनियर आपके कामकाज की तारीफ करते नजर आएंगे। इस दौरान सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। राजनीति से जुड़े लोगों की लाटरी लग सकती है। अचानक से कोई बड़ा पद या बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए साल का अंतिम महीना शुभता और सफलता लिए हुए है। माह की शुरूआत में ही आपको पैतृक संपत्ति या भूमि-भवन से जुड़े मामलों में सफलता हाथ लग सकती है। इस दौरान धन-धान्य और अचल संपत्ति की प्राप्ति के योग बन रहे हैं। घर में भाई-बहनों और परिजनों का तो वहीं कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर का पूरा सहयोग मिलेगा।